सन् 1998 से लगातार प्रकाशित

जहाज मन्दिर

अधिष्ठाता - पूज्य आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

वर्ष : 19 • अंक 6 • सितम्बर 2022 • मूल्य : 20 रु.

मोहनवाड़ी जयपुर में प्रतिमा प्रवेश समारोह

अट्ठाई तप के तपस्वी

पू. मु. श्री मलयप्रभसागरजी म.

पू. मु. श्री महितप्रभसागरजी म.

पू. मु. श्री मुकुन्दप्रभसागरजी म.

पू. मु. श्री मुकुलप्रभसागरजी म.

पू. मु. श्री मतीशप्रभसागरजी म.

॥ श्री शान्ति नाथाय नमः॥ ॥ श्री सुमतिनाथाय नमः॥ ॥ श्री पार्श्वनाथाय नमः॥
॥ श्री नाकोड़ा भैरवाय नमः॥ ॥ श्री दादागुरुदेवाय नमः॥ ॥ श्री मणिभद्रवीराय नमः॥

भव्यातिभव्य

अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव

मादर आमंत्रण

दिनांक 24 नवम्बर से 28 नवम्बर 2022

श्री सुमतिनाथ जिनालय, मीरा मार्ग सैक्टर-10
मध्यम मार्ग, मानसरोवर, जयपुर-302020

परम पावन निश्रा

पूज्य गुरुदेव आचार्य प्रवर
श्री जिन कांतिसागर सूरिश्वर जी म.सा. के शिष्य रत्न
पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति मरुधरमणि आचार्य प्रवर
श्री जिन मणिप्रभ सूरीश्वरजी म.सा.
आदि गुरु भगवंत

जिर्णोद्धार पावन प्रेरणा

पूज्या प्रवर्तिनी श्री सज्जन श्रीजी म.सा. की सुशिष्या
साध्वी रत्ना सज्जनमणि प्रवर्तिनी **श्री शशिप्रभाश्रीजी म.सा.**
आदि साध्वीवृंद

पावन सानिध्य

पूज्य प्रवर्तिनी श्री विचक्षण श्रीजी म.सा. की सुशिष्या मरुधर ज्योति **साध्वी श्री मणिप्रभा श्रीजी म.सा.** आदि साध्वीवृंद
जयपुर में विराजित समस्त मुनि भगवन्त एवं साध्वी वृंद

24 नवम्बर, 2022
महोत्सव प्रारम्भ

27 नवम्बर, 2022
परमात्मा की दीक्षा का भव्य वरघोड़ा

29 नवम्बर, 2022
द्वारोद्घाटन

मार्गशीर्ष सुदि 5, सोमवार, 28 नवम्बर, 2022

भव्य प्रतिष्ठा

निवेदक
श्री सुमति–कुशल–सज्जन सेवा ट्रस्ट
पालीताणा
बाबुलाल भंसाली — अध्यक्ष
फतेह सिंह बरड़िया — महामंत्री

निवेदक
श्री श्वेताम्बर जैन समाज, मानसरोवर (रजि.)
जयपुर
एन. के. जैन — अध्यक्ष
नरेन्द्रराज दुगड़ — मंत्री

सम्पर्क सूत्र
तिलोक चन्द गोलेछा मो. 94149 62354

आगम मंजूषा

भगवान महावीर

अबंभचरियं घोरं पमायं दुरहिट्ठियं।
नायरंति मुणी लोए भोआययण वज्जिणे ॥

अब्रह्मचर्य इस लोक में घोर पाप है, प्रमाद का घर है और दुर्गति का कारण है। इसलिए मुनि अब्रह्मचर्य का सेवन नहीं करते और संयम का भंग करे ऐसे स्थानों से दूर रहते हैं।

a breach of the vow of celibacy is a horrible sin. It is the root of carelessness and the cause of worst result. Therefore a monk should not commit such an offence in the world. He should keep himself away from such place as may challenge his self-control.

जहाज मन्दिर

मासिक

अधिष्ठाता

खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत

श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

वर्ष : 19 अंक : 6 5 सितम्बर 2022 मूल्य 20 रू.

अध्यक्ष – उत्तमचंद रांका, चैन्नई

प्रधान संपादक : श्रीमती पुष्पा ए. जैन

जहाज मन्दिर में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक / प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है

सदस्यता शुल्क

संस्था संरक्षक	:	21,000 रूपये
मानद संरक्षक	:	11,000 रूपये
15 वर्षीय सदस्यता	:	2500 रूपये
12 वर्षीय सदस्यता	:	2000 रूपये
6 वर्षीय सदस्यता	:	1000 रूपये
त्रिवार्षिक सदस्यता	:	500 रूपये
वार्षिक सदस्यता	:	200 रूपये

सदस्यता, विज्ञापन व सहयोग राशि
ICICI की किसी भी शाखा में
SHRI JIN KANTI SAGAR SOORI SMARK TRUST
BANK - ICICI JALORE
ACCOUNT NO. 065301000256
IFSC CODE - ICIC0000653
रुपये जमा कराने के बाद पेढ़ी में सूचना देना अनिवार्य है।

सम्पर्क सूत्र / प्रकाशक

श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट
जहाज मन्दिर
माण्डवला - 343042, जिला-जालोर (राज.)
मोबईल : 9649640451
E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com, www.jahajmandir.org

अनुक्रमणिका

1. नवप्रभात	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	04
2. दादावाड़ी दर्शनम् भाग 1	कोट्टूर (दादावाड़ी)	05
3. दादावाड़ी दर्शनम् भाग 1	मैसूर (दादावाड़ी)	07
4. विहार डायरी	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	08
5. श्रीश्रीमाल गोत्र का इतिहास	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	10
6. ऐसे थे मेरे गुरुदेव	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	11
7. कैवल्य की दिशा में दो कदम	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	12
8. आराधना	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	14
9. अधूरा सपना	बहिन म. साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.	20
10. पर्यावरण के प्रति एक जैन साधु की आस्था	पू. मुनि श्री मृगांकप्रभसागरजी म.	22
11. समाचार दर्शन	संकलित	23
12. जटाशंकर	आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.	34

विशेष दिवस

- 9 सितंबर पाक्षिक प्रतिक्रमण
- 12 सितंबर अकबर प्रतिबोधक दादागुरु श्री जिनचंद्रसूरिजी म. की 408वीं पुण्यतिथि, बिलाडा
- 14 सितंबर पू. श्री जयानन्दमुनि जी म. पुण्यतिथि, जयपुर
- 16 सितंबर रोहिणी
- 19 सितंबर पुष्य नक्षत्र प्रारंभ रात्रि 1:32 से
- 20 सितंबर पुष्य नक्षत्र समाप्त रात्रि 2:56
- 23 सितंबर श्री महावीर स्वामी गर्भापहार कल्याणक
- 24 सितंबर पाक्षिक प्रतिक्रमण
- 25 सितंबर श्री नेमिनाथ केवलज्ञान कल्याणक

  30 सितंबर सज्झाय उत्क्षेप विधि
- 2 अक्टूबर नवपद ओली प्रारंभ, अस्वाध्याय दिवस
- 2-4 अक्टूबर अस्वाध्याय दिवस

विज्ञापन हेतु ट्रस्टी श्री गौतम बी. संकलेचा चेन्नई से संपर्क करावे मोबाइल नंबर 94440 45407

जैन रामायण की पंक्तियाँ पढी थीं–

राम पूछे सुग्रीव ने, लंका कितनीक दूर।

आलसिया अलगी घणी, उद्यमवंत हजूर।।

श्री राम लंका की ओर चल रहे थे। चलते चलते थक चुके थे। सुग्रीव साथ था।

उन्होंने सुग्रीव से पूछा– लंका कितनी दूर है!

सुग्रीव ने इसका उत्तर गतिमापक योजन, कोस या माइल में न देकर सांकेतिक शब्दों का प्रयोग करते हुए कहा– लंका न तो दूर है, न नजदीक है। वह दूर भी है और नजदीक भी है।

जो व्यक्ति उत्साह व उल्लास से भरा है... उद्यमवंत है... पुरुषार्थ से छलक रहा है, उसके लिये एकदम पास है।

और जो आलस्य, प्रमाद से भरा है...

जो शंकाओं, आशंकाओं से भरा है, उसके लिये लंका बहुत दूर है।

इस चिंतन को अध्यात्म के क्षेत्र में समझना है।

जिसे मंजिल पाना होता है, उसे पूर्ण रूप से कटिबद्ध होना होता है। ढ़ीले और भ्रमित मन से मंजिल नहीं पायी जाती।

मजबूत कदमों से आगे बढ़ना होता है। कदम बढा नहीं कि मंजिल मिली नहीं।

भगवान् बाहुबली का उदाहरण आदर्श रूप है।

जब तक खडे थे, मंजिल से वंचित थे। क्योंकि आशंकाओं से भरा मन था। उसमें कषाय का रस था।

मगर ज्योंहि मन बदला... वंदना के भावों से कटिबद्ध हुआ...

और ज्योंहि कदम आगे बढ़ा कि वे केवली बन गये।

रोम-रोम की दृढ़ता जब कदमों में लक्षित होती है तो मंजिल पल भर में मिल जाती है।

दादावाड़ी दर्शनम् भाग 1

मंदिर-दादावाड़ी परिचय - 37

कोट्टूर (दादावाड़ी)

–मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.
– साध्वी डॉ. नीलांजनाश्रीजी म.सा.

कर्नाटक कोट्टूर में, दादावाडी नव्य।
कुशलसूरि गुरुदेव की, प्रतिमा है अतिभव्य॥
चारों दादा है यहाँ, है नव वृत्तिकार।
अभयदेव की पांचवी, मूरत मोहनगार॥
खरतर पट्ट परम्परा, सुखसागर समुदाय।
प्रतिकृति युत नामावली, वंदन मन वच काय॥

दक्षिण प्रान्त का कर्नाटक प्रदेश, जहाँ के व्यावसायिक क्षेत्र बल्लारी जिले में एक छोटा-सा विकसित नगर है कोट्टूर। इस नगर का अपना ऐतिहासिक महत्व है। यहाँ की जनता धर्मप्रिय है। आज यहाँ श्वेताम्बर जैन समाज के 58 घर हैं। जैनों की संख्या कम होते हुए भी यहाँ के लोगों की भक्ति, उत्साह अद्‌भुत है।

कोट्टूर रेलवे स्टेशन से मात्र दो कि.मी. की दूरी पर मेन रोड पर परमात्मा मुनिसुव्रतस्वामी का चित्ताकर्षक मनोहारी चौमुख मंदिर है, जिसकी प्रतिष्ठा वि.सं. 2028 माघ सुद 11 को सम्पन्न हुई थी।

यहाँ वर्षों से गुरु भक्तों के हृदय में एक दादावाड़ी के निर्माण की भावना पनप रही थी और संयोग से विहार करते हुए साध्वी चन्द्रप्रभा श्री जी म. का पधारना हुआ। भक्तों की भावना को बल मिला और श्रावकों ने दृढ़ संकल्प के साथ दादावाड़ी निर्माण हेतु ज़मीन क्रय की। 27 दिसम्बर, 1999 को साध्वी हेमप्रभा श्री जी म. के सान्निध्य में भूमिपूजन, खनन मुहूर्त के साथ दादावाड़ी के निर्माण कार्य का शुभारंभ हुआ।

श्री जिनकुशलसूरि दादावाड़ी ट्रस्ट द्वारा यह कार्य सुचारू रूप से तीव्र गति के साथ बढ़ता गया। नीचे एक सुंदर हॉल निर्मित है। ऊपर के हॉल में चारों दादा गुरुदेवों के साथ नवांगी वृत्तिकार श्री अभयदेवसूरि जी म.सा. विराजित हैं। सुन्दर कलात्मक छतरी पाँचों गुरुदेवों पर शोभायमान है। यहाँ मूलनायक दादा जिनकुशलसूरि जी हैं। युगप्रधान दादा साहब श्री जिनकुशलसूरि जी, श्री जिनदत्तसूरि जी, मणिधारी दादा श्री जिनचन्द्रसूरि जी और अभयदेवसूरि जी म.सा. के बिम्ब श्वेत मार्बल पाषाण से निर्मित हैं। प्रत्येक प्रतिमा का परिमाण 21 ग 20 इंच लम्बाई-चौड़ाई वाला है। प्रवचन मुद्रा में पाँचों गुरुदेव की प्रतिमाएँ अन्तर में आह्लाद उत्पन्न करती हैं। मन- मानस को सहज स्थिरता सुलभ कराती ये शिवपुर के सार्थवाह दृष्टिगोचर होती हैं।

वि.सं. 2061 ज्येष्ठ सुदि 6, तदनुसार 24 मई, 2004 के मंगल मुहूर्त में प.पू. उपाध्याय श्री मणिप्रभसागर

जी म.सा. के सुहस्ते चतुर्विध संघ की उपस्थिति में अष्टाह्निका महोत्सव के साथ बड़े हर्षोल्लास से प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई।

प्रतिष्ठा के दिन फलेचुन्दड़ी के आयोजन में लगभग 25000 अजैन बंधुओं को भोजन करवाया गया था। सरकार की ओर से कोट्टूर ग्रामजनों के सहयोग से दो दिन कत्लखाने पूर्णत: बंद रखने का आदेश दिया गया था।

यह स्थल जैन दादावाड़ी के नाम से प्रसिद्ध है। इस स्वतंत्र दादावाड़ी में अधिष्ठायक देव-देवी के रूप में काला भैरू, गोरा भैरू, नाकोड़ा भैरू एवं अम्बिका माता प्रत्यक्ष प्रभावी रूप में विराजमान है। प्रतिष्ठा के दो माह पश्चात् नाकोड़ा भैरव देव ने श्रावकवर्य के मुखारविन्द से श्रावकों को यहाँ काली चीज़ का उपयोग नहीं करने का निर्देश दिया।

चालीस हज़ार की आबादी वाले इस गाँव में जैनों की संख्या अल्प होने के बावजूद 150 के लगभग दर्शनार्थी दादा के दर्शन हेतु प्रतिदिन आते हैं। 70-80 भक्त पूजा सेवा का लाभ लेते हैं।

दादावाड़ी के नीचे 20 गुणा 50 फीट के विशाल व्याख्यान हॉल में सुंदर कांच से बनाई गई खरतरगच्छ के 84 आचार्यों की चित्रमय पट्टावली आलेखित है। दादावाड़ी प्रतिष्ठा के एक माह पश्चात् इस क्षेत्र के प्रभावशाली महंत श्री विद्यारण्यस्वामी जी का पत्र आया, जिसमें उन्होंने उल्लेख किया कि 'दादावाड़ी प्रतिष्ठा में क्षेत्र के सभी देवी-देवता उपस्थित थे। जिस स्थान पर यह प्रतिष्ठा हुई है, वह धन्य-धान्य, हीरे-मोती से समृद्ध है।' आश्चर्य है कि स्वामी जी ने प्रतिष्ठा समारोह देखा नहीं था, फिर भी उन्होंने यह पत्र दैवी शक्ति द्वारा प्राप्त स्फुरणाओं एवं स्वप्न के आधार पर लिखा था। स्वामी जी ने यह भी लिखा कि दादावाड़ी के बाहर गजराज देव का पहरा है, अत: कोई वस्तु बाहर नहीं जा सकती।

पास में ही जिनमंदिर है। मूलनायक श्री मुनिसुव्रत स्वामी, ऋषभदेव, संभवनाथ भगवान, पार्श्वनाथ भगवान चौमुखी जिनालय में विराजमान हैं। संगमरमर के गंभारे में ये बिम्ब भव्य रूप से शोभायमान हैं।

मंदिर परिसर में प्रथम माले में साधु-साध्वियों के लिये उपाश्रय स्वरूप आराधना भवन है। प्रति रविवार को परम उपकारी दादा गुरुदेव एवं नाकोड़ा भैरू जी तथा अम्बिका माता की सामूहिक आरती का आयोजन होता है। ज्येष्ठ सुदि पंचमी के दिन दादावाड़ी ध्वजारोहण दिवस धूमधाम से भक्तिपूर्वक मनाया जाता है। दादावाड़ी के निकट ही जैन धर्मशाला स्थित है, जहाँ लगभग 200 यात्रियों के ठहरने व भोजन की समुचित व्यवस्था उपलब्ध है।

इस ऐतिहासिक नगरी कोट्टूर की दो बालिकाओं ने दीक्षा अंगीकार की है जो वर्तमान में साध्वी श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म. के पास साध्वी मनोरमा श्री जी म. के नाम से तथा साध्वी श्री विमलप्रभा श्री जी म. के पास साध्वी चारुलता श्री जी म. के नाम से साधनारत हैं।

दादावाड़ी स्थल से 80 कि.मी. की दूरी पर विजयनगर साम्राज्य का हम्पी तीर्थ क्षेत्र स्थित है जो साधना के लिये अत्युत्तम स्थल है। यहाँ 50 कि.मी. की दूरी पर नाशिहल्ला डैम, काक्टूर; 70 कि.मी. की दूरी पर तुंगभद्रा डेम हॉस्पेट; 15 कि.मी. की दूरी पर पंचाचार्यों के पांच पीठों में सबसे बड़ा पीठ उज्जनीमठ जैसे दर्शनीय व भ्रमणीय स्थल मौजूद हैं।

मात्र आधा कि.मी. की दूरी पर प्रसिद्ध कोटेश्वर टेम्पल स्थित है। सौहार्द्र और समन्वय के प्रतीक इस मंदिर में प्रत्येक अमावस्या को 25000 हज़ार व्यक्ति दर्शन हेतु आते हैं। भक्त गण गुरुदेव के दर्शन कर अपने जीवन को धन्य बनाते है। यहाँ महावीर गौशाला पिछले 65 वर्षों से जैन समाज की देखरेख में चल रही है। स्थानक भवन, महिला स्थानक भी सुशोभित है।

पता : श्री जिनकुशलसूरि जैन दादावाड़ी

मेन रोड़, कोट्टूर-583 134 (जि. बेल्लारी) (कर्नाटक) दूरभाष : 08391-226261, 226302

मंदिर-दादावाड़ी परिचय - 38

नगर सुहाना है बडा, कर्णाटक मैसूर।
ख्याति देश विदेश है, बरस रहा जह नूर।।
दादावाडी नाम से, है मंदिर प्रसिद्ध।
सुमतिनाथ मति दान दें, देवें आतम रिद्ध।।
नीचे दादावाटिका, दादा साहब चार।
त्रय प्रतिमा इक चरण है, है जीवन आधार।।
निशदिन दर्शन पूजना, भाव सहित अवधार।
जीवन नैया को मिले, सच्चे खेवनहार।।

कर्नाटक प्रान्त का ही नहीं, सम्पूर्ण भारत में सुप्रसिद्ध पर्यटक स्थल मैसूर नगर किसी परिचय का मोहताज नहीं है। लगभग 8 लाख की आबादी वाले इस सुन्दर शहर के त्यागराज रोड पर दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरि जी की दादावाड़ी बनी हुई है।

दादावाड़ी भवन दो मंज़िला है, जिसमें ऊपर की मंज़िल पर परमात्मा का मंदिर निर्मित है। वासुपूज्यस्वामी मूलनायक के रूप में प्रतिष्ठित हैं, जिनकी 25।। ऊँची एवं 20।। चौड़ी प्रतिमा मनभावन एवं धूप में सावन के रूप में प्रतीत होती है। उनके पीछे की दीवार में स्वर्ण-पिछवाई का सुन्दर कलात्मक कार्य हुआ है, जो कि सुरक्षार्थ कांच से ढंका गया है।

अनन्त लब्धि निधान गौतमस्वामी के स्फटिक के चरण एवं श्री पुण्डरीकस्वामी के पाषाण चरण भी स्थापित हैं।

नीचे के तल पर पश्चिम-मुखी दादावाड़ी निर्मित है, जिसमें दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरीश्वर जी म.सा. की श्वेत मार्बल की प्रतिमा प्रतिष्ठित है। उनके दोनों तरफ मणिधारी दादा श्री जिनचन्द्रसूरीश्वर जी म.सा. एवं दादा श्री जिनकुशलसूरीश्वर जी म.सा. भी विराजमान हैं। तीनों ही प्रतिमाएँ 17।। ऊँची एवं 13.5।। चौड़ी हैं। मूलनायक गुरुदेव के आगे चतुर्थ दादा श्री जिनचन्द्रसूरीश्वर जी के पीतवर्णीय चरण युगल स्थापित हैं।

दादावाड़ी का वातावरण शांत-प्रशांत है। तीनों गुरुदेवों की प्रतिमाएँ आकर्षण का मुख्य केन्द्र हैं। ऐसा लगता है जैसे साक्षात् गुरुदेव धरा पर उतर आये हों और कृपामृत बरस रहा हो।

मंदिर-दादावाड़ी के निर्माण में साध्वी श्री चन्द्रप्रभा श्री जी म. एवं साध्वी श्री सुलोचना श्री जी म. की प्रेरणा रही है। इसकी प्रतिष्ठा गणि श्री पद्मविजय जी म. की निश्रा में संवत् 2050 सम्पन्न हुई। श्री पुण्डरीक स्वामी की प्रतिष्ठा संवत् 2061 में पूज्य उपाध्याय श्री मणिप्रभसागर जी म.सा. की निश्रा में सम्पन्न हुई।

दादा गुरुदेव के पीछे की दीवार पर मंदिर के समान स्वर्ण की पिछवाई की गयी है। दादावाड़ी और मंदिर की एक ही ध्वजा है। अधिष्ठायक देव-देवी के रूप में श्री नाकोड़ा भैरव एवं माता पद्मावती विराजमान हैं। दादावाड़ी में हर पूर्णिमा को सामूहिक इकतीसा एवं हर रविवार को नाकोड़ा भैरव की सामूहिक आरती होती है, जिसमें अच्छी संख्या में श्रद्धालुजन उपस्थित होते हैं।

(शेष पृष्ठ 29 पर)

130

विहार डायरी

– आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

(गतांक से आगे)

छह री पालित संघ अगाशी पहुँचा था। अगाशी तीर्थ का इतिहास जानने योग्य है। इस तीर्थ का निर्माण लगभग 200 वर्ष पूर्व खरतरगच्छ की समाचारी के संवाहक परम श्रद्धा संपन्न सेठ मोतीशा ने करवाया था। इस तीर्थ की प्रतिष्ठा आचार्य प्रवर श्री जिनमहेन्द्रसूरि के करकमलों से संपन्न हुई थी। इस मनभावन तीर्थ के दर्शनकर मन अति प्रसन्न हुआ। हाँलाकि इस मंदिर परिसर में कहीं पर भी दादा गुरुदेव के चरण या प्रतिमा नजर नहीं आई। ऐसा तो संभव नहीं कि सेठ मोतीशा ने गुरुदेव के चरण या प्रतिमा बिराजमान नहीं की हो! पर प्रतीत होता है कि बाद के काल में परिवर्तन हुआ हो।

यहाँ आचार्य यशोवर्मसूरि बिराज रहे थे। संघ माला के अवसर पर उनका पदार्पण हुआ था।

अगाशी से विहार कर भिवंडी पहुँचे। वहाँ दो दिवसीय प्रवास रहा। यह प्रवास बहुत उपयोगी रहा। यहाँ बाडमेर समाज के काफी परिवार निवास करते हैं। साथ ही मोकलसर क्षेत्र के भी काफी परिवार रहते हैं।

हम अशोकनगर रुके थे। इस क्षेत्र में बाडमेर के घर काफी हैं। प्रवचन में प्रेरणा दी गई कि यहाँ दादावाडी का निर्माण होना चाहिये।

सारे परिवार एकत्र हुए। योजना बनी। और खरतरगच्छ संघ का गठन हुआ। दादावाडी का निर्माण हुआ। उपाश्रय बना। बाद में सन् 2012 के चातुर्मास पश्चात् दादावाडी की प्रतिष्ठा संपन्न हुई। तथा 2019 के मुंबई प्रवास के दौरान उस दादावाडी में एक देवकुलिका निर्मित कर शंखेश्वर पार्श्वनाथ प्रभु की प्रतिमा की प्रतिष्ठा की गई। श्री संघ का उल्लास लगातार बढ़ता रहा।

सन् 2004 में स्थापित संघ की गतिविधियाँ एकात्म परिणाम से विस्तृत होती रही। अब तो वहाँ प्रायः चातुर्मास भी निरन्तर होते हैं। संघ की प्रगति हृदय को आह्लादित करती है।

यहाँ से हमारा विहार पूना होते हुए कुंभोजगिरि की ओर हो रहा था। वहाँ चैत्र मास की ओलीजी की आराधना का भव्य आयोजन था। मुनि मुक्तिप्रभ व मुनि मनीषप्रभ दोनों को मुंबई महावीर स्वामी देरासर में रुकना पडा था। मुक्तिप्रभ के पांव में जो फ्रेक्चर हुआ था, उसके उपचार हेतु वहाँ रुकना पडा था।

मेरे साथ मुनि मयंकप्रभ, मनितप्रभ व मेहुलप्रभ थे। साध्वी रत्ना श्री प्रकाशश्रीजी म., पूजनीया माताजी म., बहिन म. आदि एवं साध्वी दक्षगुणाश्रीजी, विरागज्योतिश्रीजी विश्वज्योतिश्रीजी आदि ठाणा साथ थे। पूना में चार दिवसीय प्रवास था। गोडीजी देरासर में सार्वजनिक प्रवचन का आयोजन था।

7 मार्च को हम पूना पहुँचे थे। 12 मार्च को वहाँ से विहार हुआ। छह दिवसीय प्रवास में छहों दिन अलग अलग क्षेत्रों में प्रवचनों का आयोजन हुआ। 7 मार्च का प्रवचन गोडीजी श्री संघ मंदिर में हुआ। ता. 8 एवं 9 मार्च का प्रवचन दादावाडी में रखा गया। 10 मार्च का प्रवचन बोटे कॉलोनी में हुआ। 11 मार्च का प्रवचन सोमवार पेठ राजस्थान जैन श्री संघ में आयोजित हुआ। ता. 12 मार्च का प्रवचन आदिनाथ सोसायटी में हुआ। शाम को वहाँ से विहार हुआ।

पूना के इस छह दिवसीय प्रवास को सफल बनाने में श्री चांदमलजी परमार, श्री इन्द्र छाजेड, श्री प्रवीण डी. जैन, महावीर छाजेड, सम्पत जैन आदि का पूरा योगदान रहा।

विशेष रूप से प्रवीण जैन व महावीर छाजेड का अनुमोदनीय पुरुषार्थ रहा।

आज जब मैं पूना के संदर्भ में इन पंक्तियों का लेखन कर रहा हूँ, तो स्वाभाविक रूप से प्रवीणजी की स्मृतियाँ आती है। वे छोटी उम्र में ही विदा हो गये। उनका संपर्क पूना दादावाडी की प्रतिष्ठा समय से रहा। उस वर्ष के चातुर्मास में वे बहुत सक्रिय थे। ऊर्जावान् युवा थे। कांग्रेसी नेता थे। उनका राजनीति में संपर्क गहरा था। मूलतः मुण्डारा जिला पाली के रहने वाले थे। तपागच्छीय परम्परा के होने पर भी हमारे प्रति उनका स्नेह, श्रद्धाभाव बहुत था।

पूना की पुरानी स्मृतियाँ मनोमस्तिष्क में उतर रही है। सन् 1989 के जयपुर चातुर्मास में साध्वी तिलकश्रीजी म. की प्रेरणा से पूना दादावाडी के ट्रस्टी श्री भीमराजजी छाजेड, श्री फतेचंदजी रांका आदि का आगमन हुआ था। पूना दादावाडी का जीर्णोद्धार चल रहा था।

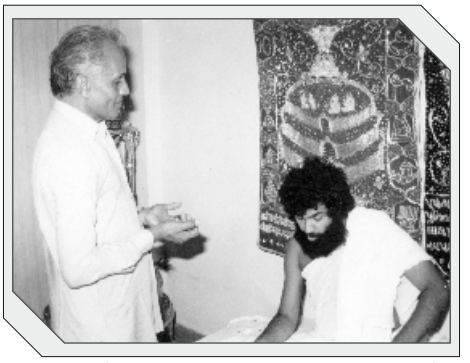

पूज्यश्री के साथ परम गुरुभक्त श्रीमान भीमराजजी छाजेड़

मंदिर व दादावाडी के लिये प्रतिमाओं का ऑर्डर देने के लिये ट्रस्टी गण पधारे थे। मेरे सामने ही मूर्तिकार को बुलाया गया व उन्हें ऑर्डर दिया गया। प्रतिष्ठा की विनंती की गई।

इस दादावाडी का अपना इतिहास है। इस विशाल दादावाडी का निर्माण जोधपुर के पास में स्थित मूल रीयां नगर के नगरसेठ और बीकानेर निवासी श्री अमरचंदजी कोठारी परिवार द्वारा कराया गया था। श्री कोठारी जो खरतरगच्छ की वृहत् शाखा के परम अनुयायी थे और दादा गुरुदेव के परम भक्त थे, जब उन्होंने अपना व्यापार पूना में फैलाया तब उन्होंने सबसे पहले दादावाडी हेतु विशाल भूखण्ड खरीदा। ये वही अमरचंदजी कोठारी हैं, जिन्होंने मुंबई में भोईवाडा में श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ परमात्मा का तीन मंजिला शिखरबद्ध मंदिर का निर्माण कराया था।

इस दादावाडी की प्रतिष्ठा वि. सं. 1856 माघ शुक्ल पंचमी को खरतरगच्छाधिपति श्री जिनचन्द्रसूरि के पट्ट प्रभावक आचार्य श्री जिनहर्षसूरि के करकमलों से संपन्न हुई थी।

चरणों पर अंकित शिलालेख इस प्रकार है–

सं. 1856 शाके 1721 प्र.। माघ शुक्ला 5 गुरौ श्री बीकानेर वास्तव्य को। सा. अमरचन्द्रेण श्री पूना मध्ये दादा श्री जिनकुशलसूरीणां पादन्यासः कारितं बृहत्खरतरगच्छेश श्री जिनचन्द्रसूरिपट्टप्रभाकर श्री जिनहर्षसूरिभिः प्रतिष्ठितं।।

इस दादावाड़ी का जीर्णोद्धार प्रवर्तिनी श्री तिलकश्रीजी एवं साध्वी श्री मंजुलाश्रीजी की प्रेरणा से हुआ है। उनकी ही निश्रा में खात मुहूर्त वि.सं. 2041 मिगसर सुदि दूज दिनांक 13.12.1985 को एवं शिलान्यास 21.12.1985 को सम्पन्न हुआ था।

215 वर्ष प्राचीन इन चमत्कारी चरण पादुका का उत्थापन नहीं किया गया। बिना उत्थापन किये ही इस दादावाडी का पूरा जीर्णोद्धार कराया गया। जीर्णोद्धार के समय ऊपर श्री नाकोडा पार्श्वनाथ प्रभु का मंदिर एवं नीचे दादावाडी का निर्माण किया गया। नीचे दादावाडी में मूल गर्भगृह में तीसरे दादा श्री जिनकुशलसूरि की विशाल प्रतिमा बिराजमान की गई। बाहर कोली मंडप में प्रथम दादा श्री जिनदत्तसूरि एवं मणिधारी जिनचन्द्रसूरि की प्रतिमा प्रतिष्ठित की गई।

इस दादावाडी के जीर्णोद्धार में सिवाना निवासी दादा गुरुदेव के परम भक्त सुश्रावक श्री भीमराजजी सा. छाजेड का बहुत योगदान रहा है।

पूना चातुर्मास के बाद हमारा विहार सांचोर प्रतिष्ठा के लक्ष्य से राजस्थान की ओर हुआ था। सांचोर के दूसरे चातुर्मास प्रवेश के अवसर पर पूना के वरिष्ठ श्रावकगण पधारे थे। वापस वहाँ से पूना जाते समय बीच में श्री भीमराजजी अस्वस्थ हो गये। उनका स्वर्गवास हो गया। हमने एक वरिष्ठ आत्मीय सुश्रावक खो दिया।

बाद में उनका पूरा परिवार इन्द्र, महावीर, नरेन्द्र लगातार जुडे रहे हैं। हर कार्य में उनका योगदान रहता है। गच्छ के कार्यों में उनकी सक्रियता अनुमोदनीय रहती है। इसी छाजेड परिवार की ओर से कुंभोजगिरि में ओलीजी आराधना का कार्यक्रम था।

पूना दादावाडी की प्रतिष्ठा के लिये दो मुनियों को विनंती की गई थी। खरतरगच्छ में मैं था व तपागच्छ में मुनि श्री अरुणविजयजी म. थे। यह प्रतिष्ठा वि.सं. 2048 ज्येष्ठ सुदि 10 ता. 21 जून 1991 को संपन्न हुई थी। उस प्रतिष्ठा व प्रतिष्ठा के बाद हुए चातुर्मास में श्री भीमराजजी छाजेड, नगराजजी रांका, नगराजजी ओसवाल, चांदमलजी परमार, विजयराजजी रांका का बहुत योगदान रहा था।

चातुर्मास के बाद आदिनाथ सोसायटी में उपधान तप भी संपन्न हुआ था। उसका माला महोत्सव अपने आप में ऐतिहासिक था।

पूना से विहार कर हम कुंभोजगिरि पहुँचे। **(क्रमशः)**

गोत्र इतिहास
40

श्रीश्रीमाल गोत्र का इतिहास

आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

इस गोत्र का संबंध महतियाण जाति से है। घटना दिल्ली की है। वहाँ जो बादशाह था, उसके खजांची का दायित्व श्रीमंत शाह श्रीमल्ल सम्हालते थे। वे शैव धर्म के अनुयायी थे। बादशाह हमेशा श्रीमल्ल के सामने उनके धर्म की मजाक करता था।

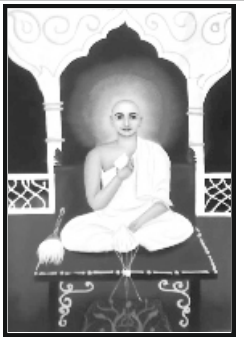

वह कहता था- तुम्हारा धर्म बडा ही अजीब है। लाखों, करोडों तो देवी देवता है। तुम्हारे धर्मशास्त्र पुराणों में कपोल कल्पित घटनाओं/कथाओं की भरमार है। असंगत और परस्पर विरोधाभासी बातें हैं।

अपने धर्म की निंदा की बातों से श्रीमल्ल बहुत दुखी रहता था। पर वह बादशाह को जवाब देने की स्थिति में नहीं था। क्योंकि वह जानता था कि हमारे पुराणों में ऐसा ही वर्णन है।

उन्हीं दिनों दिल्ली नगर में आचार्य जिनचन्द्रसूरि का पदार्पण हुआ। योगानुयोग श्रीमल्ल ने गुरुदेव के दर्शन किये। उनके साक्षात्कार से उसका हृदय बदला। उसने गुरु महाराज से सप्त व्यसनों के त्याग का संकल्प किया। परमात्मा व गुरुदेव के प्रति श्रद्धा से परिपूर्ण हो जैनत्व धारण कर लिया। वह परमात्मा महावीर का अनुयायी हो गया।

उसने बादशाह से कहा- आईये! मैं आपको सच्चे धर्म और धर्मगुरु के दर्शन कराता हूँ।

बादशाह ने आचार्य जिनचन्द्रसूरि के दर्शन किये। धर्मचर्चा से वह बहुत प्रभावित हुआ। उसने मांसाहार का त्याग कर दिया। बादशाह ने अपने खजांची श्रीमल्ल के बारे में जब सुना कि वह आचार्य जिनचन्द्रसूरि का अनुयायी हो गया है। उसने जैन धर्म को स्वीकार कर लिया है। तो बादशाह अतिप्रसन्न हुआ।

बादशाह ने श्रीमल्ल से कहा- अब तुम्हारा जन्म सफल हुआ। उसने श्रीमल्ल को चामर, छत्र आदि सिरोपांव भेंट किया। साथ ही पांवों में सोना पहनने का अधिकार दिया। आचार्य जिनचन्द्रसूरि से प्रतिबोध प्राप्त श्रीमल्ल का परिवार श्रीश्रीमाल कहलाया।

❋

(शेष पृष्ठ 11 का)

ऐसे थे मेरे गुरुदेव

लाज आपके हाथ है। नैया को पार लगाना अब आपके हाथ है।

गुरुदेवश्री ने सारी स्थिति जानी। उन्होंने अपनी चादर को मंत्रित किया और कहा- लो! इस चादर को ले जाओ। मिठाई के पात्र को इससे ढंक देना। एक ओर से जितना सामान निकालना हो, निकालते रहना। लेकिन चादर को हटाना मत!

और चमत्कार घटा। सारे संघ को वह मिष्ठान्न परोसा गया। बारहसौ के लिये बना मिष्ठान्न छब्बीससौ में मनुहार के साथ परोस दिया गया। भोजन की पूर्णाहुति पर जब चादर हटायी गई तो सभी आश्चर्यचकित रह गये कि मिठाई तो उतनी ही और पडी है।

इस साक्षात् चमत्कार का अनुभव कर श्रावक लोग, कार्यकर्ता और सकल श्री संघ चकित रह गये थे।

जैसलमेर संघ के आयोजन के पश्चात् पूज्य गुरुदेवश्री विहार कर फलोदी पधारे। फलोदी का कार्यक्रम पूर्व निर्धारित था। (क्रमशः)

78

ऐसे थे मेरे गुरुदेव

आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

बाडमेर श्री संघ की विनंती स्वीकार कर पूज्य गुरुदेवश्री ने सन् 1961 अर्थात् वि. सं. 2017 का चातुर्मास बाडमेर में किया। चातुर्मास पश्चात् श्री नाकोडाजी तीर्थ पर उपधान तप की आराधना हुई।

ता. 29.11.61 को प्रारंभ हुआ यह तप ता. 5.2.62 को माला परिधान के साथ पूर्णता को प्राप्त हुई। इस वर्ष लम्बा समय पूज्यश्री ने बाडमेर क्षेत्र को दिया। लगभग एक वर्ष का समय बाडमेर और आसपास के क्षेत्र में रहे। इस स्पर्शना के परिणाम स्वरूप समाज में धर्म-जागृति का अनूठा वातावरण बना।

उपधान तप की पूर्णाहुति के पश्चात् बाडमेर से जैसलमेर के पैदल संघ का निर्णय किया गया। बाडमेर से संघ का प्रस्थान हुआ। तीन दिन के पश्चात् रविवार का दिन था।

बाडमेर और आसपास के क्षेत्रों के श्रद्धालु श्रावक गण बडी संख्या में संघ के दर्शन करने पहुँचे। इस घटना को बाडमेर के प्रत्यक्षदर्शी वृद्ध श्रावकों द्वारा मैंने स्वयं सुना है। आज भी पुराने श्रावक इस घटना का स्मरण कर रोमांचित हो उठते हैं।

संघ में एक हजार यात्री थे। सौ के करीब कर्मचारी थे। प्रतिदिन 100 मेहमानों का आगमन होता था। इस आधार पर कार्यकर्ताओं द्वारा 1200 व्यक्तियों का भोजन तैयार करवाया गया। लेकिन उस दिन मेहमानों का मेला लग गया।

भोजन बना था 1200 का और भोजनार्थी थे 2600! दुगुने से भी ज्यादा।

कार्यकर्ता घबराये। इतनी व्यवस्था इस जंगल में करना मुश्किल है। उसमें भी पुडी और सब्जी की व्यवस्था तो संभव थी, पर मिष्ठान्न का बनना संभव नहीं था।

कार्यकर्ता चिंता में पड गये। वे दौडे-दौडे गुरुदेवश्री के पास पहुँचे। शब्दों द्वारा उनका विनय प्रकट हुआ। सारी हकीकत बताते हुए उन्होंने कहा- गुरुदेवश्री! आज हमारी

(शेष पृष्ठ 10 पर)

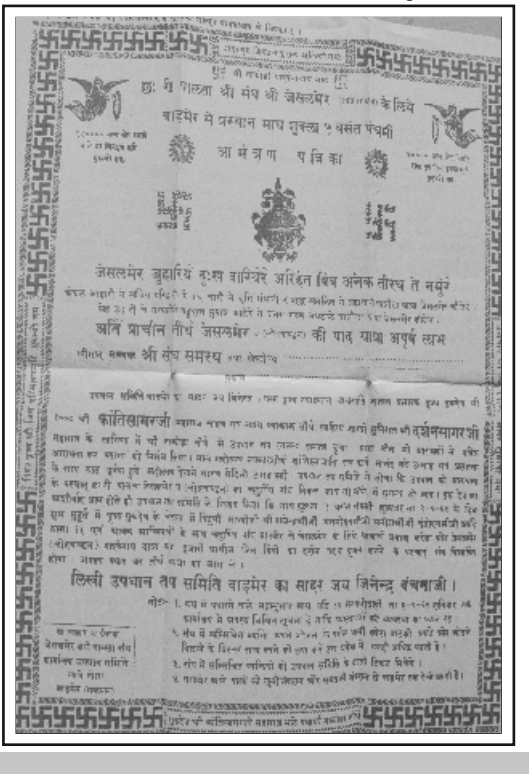

पत्र में लेख

कैवल्य की दिशा में दो कदम

– गच्छाधिपति आचार्य जिनमणिप्रभसूरि

प्रिय आत्मन्!

तुम्हारा पत्र मिला है। तुम्हारे पत्र में प्रश्न है और इन प्रश्नों की पृष्ठभूमि में जिज्ञासा का सौन्दर्य है। मैं इससे अतिप्रसन्न हूँ।

तुम्हारे प्रश्न न तो 'टाइम पास' करने का व्यर्थ बहाना है, न अपनी श्रेष्ठता साबित करने का तुच्छ प्रदर्शन! और न ही उत्तरदाता की परीक्षा लेने का कोई अहंकार भरा उपाय! ये सब जहाँ होते हैं, वहाँ समाधान का अमृत नहीं मिलता क्योंकि मूल लक्ष्य ही वैसा नहीं होता।

कुछ लोग होते हैं जो आत्महीनता की लघुताग्रंथी का शिकार बनकर अपनी उच्चता या विद्वत्ता का थोथा प्रदर्शन करने में लगे रहते हैं। सच तो यह है प्रिय आत्मन् कि अपनी श्रेष्ठता/उच्चता साबित करने की कोई आवश्यकता ही नहीं होती। जो ऐसा करता है, वह ज्ञानी नहीं, घोर अज्ञानी होता है।

ज्ञान तो भीतर से उठी ऐसी दिव्य सुगंध है, जिसका आस्वादन समूचा जगत स्वतः कर लेता है। कोई फूल किसी भी पत्र/पत्रिका में विज्ञापन नहीं छपवाता। वह तो खिलता है परिपूर्ण विकास के साथ, अपनी मस्ती में... अपने समूचे अस्तित्व को सुगन्ध से भर देता है इतना कि सुगन्ध और फूल एक दूसरे के पर्याय कहलाते हैं। भौंरें दूर-दूर से उड आते हैं। सच तो यह है कि ये विज्ञापन गुणधर्म की अत्यन्त अल्पता या संपूर्ण अभाव के ही परिचायक होते हैं।

मैं तुम्हारे स्वभाव से परिचित हूँ। हजार दुर्गुण हो सकते हैं तुममें। यह कोई अचरज की बात भी नहीं। यदि दुर्गुण नहीं होते तो सिद्धशिला पर आरूढ होते। इस दुनिया में हमारी उपस्थिति ही विकृतियों के कारण है। पर एक गुण मैंने पाया है- लक्ष्य की प्रतिबद्धता!

फिर तेरे सवालों में भी अनोखी अदा है। यह अदा झूठी अभिनय-व्यंजना नहीं है। ऐसा होता तो सवाल झूठा होता। झूठे सवाल तर्क बुद्धि से पैदा तो किये जा सकते हैं, पर उनमें गहन रुचि, तीव्र लगन व आत्म-भाव नहीं होता।

कल दोपहर एक व्यक्ति आया था मेरे पास! न तो चेहरे पर कोई खिलखिलाहट थी, न उसके शब्दों में जिज्ञासा की गहराई। उसने प्रश्न किया- मोक्ष कैसे मिलेगा! मुझे केवलज्ञान पाना है!

जवाब देने से पहले मैंने उसकी सूनी आंखों में गहराई से झांका। मैंने प्रतिप्रश्न किया- क्या तुम वास्तव में उस मार्ग को जानने की उत्कंठा भर कर आये हो! क्या उस मार्ग का बोध प्राप्त कर तुम तत्क्षण उस दिव्य मार्ग पर चलने के लिये उत्साहित हो जाओगे!

वह तो एकदम हडबडा गया। बोला- यह सब तो कुछ सोचा ही नहीं है। मैं तो यों ही पूछ रहा था।

'यों ही पूछने' के विषय में मैंने बहुत सोचा है, पर निष्कर्ष नहीं निकाल पाया हूँ। क्या पूछने वाले के पास शब्द और समय फालतू है या जिनसे पूछ रहा है, वे निष्कर्म है! हर क्रिया के पीछे उद्देश्य की अनिवार्यता होनी ही चाहिये।

प्रिय आत्मन्!

तेरा सवाल खुद की खबर के विषय में है। अध्यात्म के वातायन में यही सवाल 'सवाल' है। शेष सवाल बुद्धि का कचरा है।

कहा है-

चेतन! मैं खुद ही एक सवाल!

चेतन! तूं स्वयं सवाल है। तुझसे बडा और दूसरा सवाल ही क्या है!

और न कोई प्रश्न नहीं है, इक मुझ पास सवाल।
पूछूं न किससे खुद से पूछूं, तोड सकल जंजाल।।1।।

मैं अपने से ही कह रहा हूँ कि बस! एक ही सवाल है मेरे पास! न शंकाओं का समूह है, न प्रश्नों की लम्बी सूची! जेहन से एक ही प्रश्न टकरा रहा है, और मैं इस मामले में दृढ हूँ कि यह सवाल किसी और से नहीं पूछूंगा।

रास्ते के सारे अवरोध मिटाकर, जंजाल का बम्पर तोडकर अपने से ही पूछूंगा। मन का स्वभाव है- वह हमेशा 'स्व' से दूर भागता है। 'पर' की मृगमरीचिका में उलझ कर तडपता रहेगा, पर अपने भीतर के अमृत में उतरने का साहस नहीं करेगा। 'दिया तले अंधेरा' चारों ओर खोजेगा, अपने अन्तर में टटोलने का भी प्रयास नहीं करेगा। पर जो 'स्व' के सवाल से परिचित हो गया, उसके लिये सारे बन्धन तोड़ना और मन को मोड़ना बड़ा आसान हो जाता है।

सारी दुनिया के चिहुं दिशि में, पडा है घेरा डाल।
जो उलझा वो क्या सुलझाये, मेरा एक सवाल।।२।।

प्रश्न हर व्यक्ति का है, पर समग्रता नहीं आती। पूर्ण समर्पण प्रकट नहीं होता। रूचि के अभाव में समाधान की प्राप्ति नहीं होती।

जटाशंकर गर्मी में घूम रहा था। दूर सामने ठंडा पानी बनाने वाली मशीन नजर आई। सोचा- ठंडा पानी पी लूं। तेरह वर्ष की बच्ची पानी का विक्रय कर रही थी। उसने पानी के दाम पूछे। बच्ची ने कहा- दो रूपया! जटाशंकर बोला- सिर्फ एक गिलास पानी के दो रूपये! बहुत ज्यादा है। एक रूपये में देती हो तो बोल!

वह बच्ची दो मिनट तक बाबूजी को देखती रही। बाद में सन्नाटा चीरती हुई बोली- बाबूजी! आपको प्यास लगी ही नहीं है। यदि प्यास होती तो मोलभाव नहीं होता। पहले पानी पीते, बाद में भाव पूछते। ऐसा ही हमारा स्वभाव है। पूर्ण प्यास तो तब जगती है, जब अन्य कोई स्वरूप दिखाई ही नहीं दे।

पर सारी दुनिया बाहर अंधेरे में हाथ पांव मारती रह जाती है। जो स्वयं उलझा है, वो दूसरों को क्या सुलझायेगा! इसीलिये तो यह सवाल मैं किसी ओर से पूछना नहीं चाहता। अपने आप से पूछूंगा।

उत्तर मुझे मिले तो पूछूं, खुद से खुद का सवाल।
मैं हूँ कौन मुझे समझावो, मेरे अन्तर लाल।।३।।

पर घबरा मत! तूं निश्चिंत होकर पूछ! तुझे जवाब अवश्य मिलेगा। क्यों चिंता करता है? पूछने वाला भी तूं है, जवाब देने वाला भी तूं है। बस! तेरे अन्तर की आवाज तुझ तक पहुँचनी चाहिये। तार जोड दो अपने अन्तर से। बस यह सवाल रोम-रोम से उठने दो- 'मैं कौन हूँ.... मैं कौन हूँ... मैं कौन हूँ...!

कण-कण से आने दो आवाज, मन के जर्रे-जर्रे को चिंघाडने दो यह ध्वनि! अन्य दृश्य भूल जाओ। भूल जाओ सारी दुनिया को। कुछ याद न रहे। अपन समूचे अस्तित्व को इसी प्रश्न में अर्पित हो जाने दो। बस! फिर तो अमृत बहना ही है-

भीतर से चिंगारी आई, तुम तो मालामाल।
अक्षय सुख के स्वामी तुम हो, मणिप्रभ भीतर चाल।।४।।

इस जवाब में तुम्हारा वास्तविक परिचय छिपा है। परिचय के साथ-साथ प्राप्ति पथ का भी दर्शन छिपा है।

प्रिय आत्मन्!

तुम मालामाल हो। असीम/अनंत संपत्ति के तुम मालिक हो। दोनों हाथों से उलीचो/लुटाओ, फिर भी खत्म तो क्या, शतांश भी कम नहीं होने वाला खजाना तुम्हारे ही भीतर छिपा पडा है। पा लिया कि सारी दरिद्रता मिटी। सारी पीडा टली। पर पाने की शर्त एक ही है 'भीतर चाल'। अपने भीतर उतर। भीतर झांक।

चलो! आगे बढो! और पाओ आत्मा का अनंत साम्राज्य! कैवल्य का खजाना!

नवपद आराधना

गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.

अरिहंतपद की आराधना

जैन जगत में नवपद की महिमा अपरंपार है। नवपद यानि 1. अरिहंत 2. सिद्ध 3. आचार्य 4. उपाध्याय 5. साधु 6. दर्शन 7. ज्ञान 8. चारित्र और 9. तप।

यह आराधना वर्ष में दो बार आयंबिल तप के द्वारा की जाती है।

1. चैत्र सुदि 7 से 15 (पूनम) तक और 2. आसोज सुदि 7 से 15 (पूनम) तक।

नवपद ओली आराधना का प्रारंभ आसोज माह से किया जाता है एवं कुल 9 ओली अर्थात् चाढ़े चार वर्ष तक कुल 81 आयंबिल के साथ यह तप पूर्ण होता है।

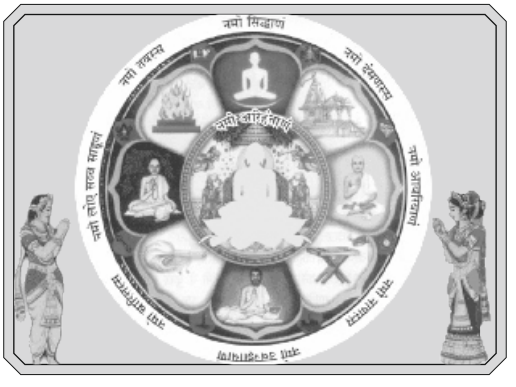

नवपद आराधना में प्रथम पद में अरिहंत पद की आराधना की जाती है। अरि यानि शत्रु, हंत यानि नाश करने वाले। शत्रुओं का नाश करने वाले अरिहंत कहलाते है।

अगर अरिहंत नहीं होते तो करुणा का इतना प्रचार नहीं होता। धर्म का ज्ञान नहीं होता। शासन की स्थापना नहीं होती और सद्गति और पुण्य भी नहीं होता।

अरिहंत परमात्मा की देशना से इन सब बातों का ज्ञान सारे जगत को हुआ।

अरिहन्त परमात्मा के 12 गुण होते है। आठ गुण परमात्म भक्ति से प्रेरित होकर देवता करते है तथा चार गुण कर्मक्षय होने पर प्रकट होते है।

1. अशोक वृक्ष- जो परमात्मा के शरीर से 12 गुना बड़ा होता है।
2. सुर पुष्प वृष्टि- परमात्मा के विचरण क्षेत्र में देवता विविध फूलों की बरसात करते हैं।
3. दिव्य ध्वनि- विविध वाद्य यंत्रों को बजाकर देवता दिव्य नाद करते हैं।
4. चामर युगल- अरिहंत प्रभु के दोनों तरफ देवता खड़े होकर चामर से प्रभु की सेवा करते है। उसे विंजना कहा जाता है।
5. स्वर्ण सिंहासन- प्रभु के बैठने के लिए दिव्य सिंहासन की रचना देवता करते हैं।
6. भामंडल- प्रभु के मस्तक के पीछे सूर्य के समान जो आभामंडल होता है जिसे भामंडल कहते है। इस भामंडल के द्वारा ही हम अरिहंत प्रभु के मुख को निहार सकते है।
7. देव दुंदुभी- दिव्य नाद द्वारा देवता सभी दिशाओं में प्रभु की जय जयकार करते हैं।
8. छत्र- प्रभु के सिर के ऊपर तीन छत्र की रचना देवता करते हैं।

कर्मक्षय से प्रकट होने वाले गुण- 1. ज्ञानातिशय, 2. पूजातिशय, 3. वचनातिशय और 4. अपायापगमातिशय।

ऐसे गुण संपत्ति वाले देव देवेंद्रों से पूजित, तीन लोक के आधार अरिहंत परमात्मा को नमस्कार हो।

जगत में पूजनीय वंदनीय सेवनीय और तारने वाले ये अरिहंत है ऐसा सोचकर नवकार के प्रथम पद से हमें अरिहंत परमात्मा को भावपूर्वक वंदन करना चाहिए।

अरिहंत परमात्मा की आराधना के लिए 12 खमासमण, 12 लोगस्स का काउसग्ग, 12 नवकार मंत्र की माला आदि विधि करनी चाहिए।

अरिहंत परमात्मा के 34 अतिशय (विशेष प्रभाव) होते है। वाणी के 35 गुण होते है।

अरिहंत परमात्मा की भक्ति को अपने जीवन में प्रथम

स्थान देना चाहिए।

जिनवाणी सार- तन-मन-धन से समर्पित भाव पूर्वक की गयी आराधना अवश्य ही आत्मा को क्रमशः जिनशासन, स्वर्ग, मोक्ष सुख प्रदान करते हुए परमात्मा भी बनाती है।

सिद्ध पद की आराधना

नौ पदों में किसी भी व्यक्ति-विशेष को वंदना नहीं की गयी है। जो आत्मा उन महान गुणों तक पहुँचे है उन सभी गुणीजनों को एक साथ वंदना की गयी है।

सिद्ध प्रभु का परिचय- जिन आत्माओं ने खुद के ऊपर लगे हुए सभी कर्मों का क्षय कर दिया हो। जो संसार के बंधन से मुक्त हो गए हैं, जो कभी जन्म नहीं लेंगें, जिनकी कभी मृत्यु नहीं होगी, जिनका कोई शरीर, मन नहीं है, उन पवित्र आत्माओं को सिद्ध कहा जाता है।

सिद्ध पद को प्राप्त करना ही आज के हर भव्य जीव का लक्ष्य है। अरिहंत प्रभु के कुछ कर्म क्षय होना बाकी होता है। आयुष्य का बंधन भी होता है। जबकि सिद्ध प्रभु को कोई बंधन नहीं है।

सिद्ध प्रभु के साथ जो आत्मा अपना मन लगा देता है उसका मोक्ष निश्चित हो जाता है। वे सिद्ध भगवंत सभी बंधन से रहित, सभी सिद्धि को प्राप्त, चौदह राजलोक के मुकुट समान भाग पर रहे हुए है। सामान्य भाषा में कहें तो अपने ऊपर छत्र के समान वो बिराजित है।

हमारी आराधना, तपस्या, साधना आदि का यही लक्ष्य होना चाहिए कि मैं सिद्ध पद को प्राप्त करूँ। बिना लक्ष्य के कोई भी आराधना सिद्ध पद को प्राप्त नहीं करा सकती। बिना लक्ष्य की आराधना से पुण्य होगा, देवगति मिल सकती है पर मोक्ष नहीं मिल सकता।

संसार में अपना आयुष्य पूरा हुआ कि चलो। मोक्ष में आयुष्य ही नहीं है। शाश्वत काल की स्थिरता वहां होती है।

सामान्य नियम है कि जब कभी इस संसार सागर से एक आत्मा सिद्ध गति में जाती है तब एक आत्मा अव्यवहार राशि से निकल कर व्यवहार राशि में आती है। हम भी तभी व्यवहार राशि में आये है जब कोई आत्मा सिद्ध गति में गयी थी। इसलिए उन सिद्ध परमात्मा का हमारे ऊपर बहुत बड़ा उपकार है। ऐसे अनंत उपकारी सिद्ध प्रभु को हृदय से वंदना।

वो ही हमारे आदर्श, तारक, श्रद्धेय, आराध्य है।

उनसे ही मेरा नाता है, सच्चा नाता है, अटूट नाता है।

उन सिद्ध जीवों ने अपने आठ कर्मों का क्षय किया है। वो ही कार्य मुझे भी करना है।

उन सिद्ध प्रभु के आठ कर्मों के क्षय से आठ गुण प्रकट होते हैं।

पहला कर्म ज्ञानावरणीय, उसके क्षय से अनंत ज्ञान यह गुण प्राप्त होता है।

जिस ज्ञान से आत्मा सभी जीव, पुद्गल, परमाणु, पर्याय, काल को एक ही समय में देख सकता है। उनसे छिपा हुआ जगत में कोई कार्य नहीं होता।

दूसरा कर्म दर्शनावरणीय, उसके क्षय से अनंत दर्शन यह गुण प्रकट होता है। जो आत्मा का सहज गुण है। जिससे हम सभी पदार्थों का सामान्य ज्ञान प्राप्त करते है।

तीसरा कर्म वेदनीय, उसके क्षय से आत्मा में अव्याबाध सुख यह गुण प्रकट होता है।

प्रकट होना अर्थात् सभी गुण आत्मा में उपस्थित है। उन गुणों पर कर्मों का आवरण आ गया है। जैसे ही वह पर्दा हटता है-क्षय होता है। उसी समय गुण आत्मा में पूर्ण रूप से प्रकट हो जाता है। अव्याबाध सुख से अनंत काल तक उन्हें कोई पीड़ा नहीं होगी। हम संसार में कितनी सारी पीड़ाओं को सहन कर रहे है।

चौथा कर्म मोहनीय, उसके क्षय से आत्मा में अनंत चारित्र यह गुण प्रकट होता है। जैसे संसार में जीव मिठाई को खाकर खुश होता है, वैसे ही उससे भी ज्यादा अनंत सुख की

अनुभूति सहजानंद अवस्था में सिद्ध के जीवों को होती है।

पांचवां कर्म आयुष्य, उसके क्षय से आत्मा में अक्षय स्थिति ये गुण प्रकट होता है। जिससे जन्म, मृत्यु, बुढ़ापा आदि सभी दुखदायी अवस्था का नाश हो जाता है। संसार में आयुष्य पूरा होते ही निकलना पड़ता है। आयुष्य पूरा होने का भी इन्तजार किया जाता है। मोक्ष में कोई आयुष्य नहीं है, जिससे वहां कोई दु:ख नहीं है।

छठा नाम कर्म, उसके क्षय से अरूपी यह गुण प्रकट होता है। संसार में शरीर के कारण कोई सुंदर, कोई भद्दा हो सकता है। मगर सिद्ध गति में शरीर ही नहीं होता। उनकी आत्मा निजानंद में रमण करता है।

सातवां कर्म गोत्र कर्म, उसके क्षय से आत्मा में अगुरुलघु यह गुण प्रकट होता है। जिससे सिद्ध गति में सभी जीव समान हो जाते है। संसार कोई बड़ा, कोई छोटा, कोई खानदानी, कोई फुटपाथी हो सकता है। किंतु सिद्ध पद सभी आत्मा को एक समान बना देता है।

आठवां कर्म अंतराय, उसके क्षय से आत्मा में अनंतवीर्य यह गुण प्रकट होता है। जिसके द्वारा जगत के सभी जीवों को अभयदान दिया जाता है। संसार में भोग, उपभोग, दान, लाभ आदि सभी कार्य में अंतराय कर्म बाधा बनता है। सिद्ध प्रभु उस कर्म को नष्ट कर देते है, जिससे उन्हें कोई बाधा नहीं रहती।

ऐसे घाती और अघाती कर्मों का क्षय करने वाले, चौदह राजलोक के अग्र भाग में स्थित, स्फटिक की तरह निर्मल है आत्मा जिनकी ऐसे महा उपकारी सिद्ध प्रभु को हमारे शरीर के हर रोम-रोम से वंदन।

आचार्य पद की आराधना

सिद्ध परमात्मा को नमन कर के शासन की स्थापना अरिहंत परमात्मा करते है।

अरिहंत परमात्मा की अनुपस्थिति में आचार्य भगवंत जिन शासन का प्रतिनिधित्व करते है। साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका रूप चतुर्विध संघ का निर्वहन करते है।

सिद्ध प्रभु ने हमको निगोद से बाहर निकाला।

अरिहंत प्रभु ने हमको धर्म का उपदेश दिया।

वीर प्रभु के निर्वाण से आज तक प्राय: 2600 साल हुए हैं। और परमात्मा का शासन 18400 वर्ष आगे तक चलेगा। इतने लंबे समय तक शासन को आचार्य भगवंत चलाएंगें।

वर्तमान में अपने भरत क्षेत्र में अरिहंत परमात्मा सदेह विराजित नहीं होने से उनकी अनुपस्थिति में आचार्य पदधारी प्रभु हमें जिनवाणी का अर्थ समझाते है।

पञ्च परमेष्ठी में आचार्य का स्थान बीच में है। आचार्य खुद भी प्रकाशित है। औरों को भी खुद की कान्ति से प्रकाशित करते है।

नमो आयरियाणं पद से किसी एक आचार्य को ही वंदन नहीं है। जगत में जितने भी आचार्य है उन्हें वंदना की गयी है।

जिनशासन में कोई भी कार्य आचार्य भगवंत को पूछे बिना नहीं किया जा सकता। क्योंकि संघ को चलाने की जिम्मेदारी उनको दी गयी है। गच्छाचार पयन्ना में आचार्य को तीर्थंकर के समान कहा गया है।

आचार्य के 36 गुण होते है। आचार्य क्षमा की साक्षात मूर्ति होती है।

उनके उपदेश से संघ, समाज, लोगों के मन में सहज ही स्नेह का वातावरण निर्मित होता है। आराधना, साधना, तपस्या, व्रत, पच्चखान आदि उनकी साक्षी में करने से विशेष फल प्राप्त होता है।

उनके 36 गुणों का वर्णन- 5 इंद्रिय का संवरण, 9 प्रकार की ब्रह्मचर्य गुप्ति के धारक, 4 प्रकार के कषाय से मुक्त, 5 महाव्रत से युक्त, 5 आचार के पालक, 5 समिति के पालक, 3 गुप्ति के धारक इस प्रकार ये 36 गुण हुए।

ऐसे आचार्य प्रभु को हमारा भाव भरा वंदन एवं उनसे यह प्रार्थना है कि आपके आशीष से हमारे जीवन में पंचाचार की सुवास प्रकट हो।

उपाध्याय पद की आराधना

उपाध्याय यानि शिष्यों के पठन-पाठन की जिम्मेदारी

वहन करने वाले, विनय की प्रतिमूर्ति, निश्रावर्ति सभी साधुओं को संयम मार्ग में स्थिर करने का महान कार्य करने वाले।

आचार्य भगवंत शासन को चलाते है तो उपाध्याय संघ को चलाते है।

जिस वाणी को तीर्थंकरों ने प्ररूपित की है उस वाणी को उपाध्याय पदधारी हमें सुनाते है।

योग्य आत्मा को वात्सल्य, समझ, स्नेह देकर उसे धर्म में रत करना – यह उनकी जिम्मेदारी है।

जैसे पंच परमेष्ठी में बीच में आचार्य बिराजित है, वैसे गुरु तत्त्व के बीच उपाध्याय बिराजित है। साधु और आचार्य के बीच पुल का कार्य उपाध्याय करते है। आचार्य जिनशासन के राजा है तो उपाध्याय जिनशासन के युवराज है। और आने वाले समय में वो आचार्य बनकर शासन को मार्ग दिखाते है। आचार्य को तीर्थंकर की उपमा दी गयी है तो उपाध्याय को गणधर की उपमा दी गयी है।

तीर्थंकर अर्थ का उपदेश देते है। आचार्य भी वही अर्थ का उपदेश देते है। गणधर सूत्रों-आगमों की रचना करते है। उपाध्याय उन आगमों का अर्थ सिखाते है। उपाध्याय भगवंत गच्छ की जिम्मेदारी सँभालते है। जिससे आचार्य भगवंत गच्छ के साथ शासन को चला सकते है।

मुमुक्षु को दीक्षा आचार्य देते है। उपाध्याय उसे संभालते है।

आचार्य पिता जैसे है तो उपाध्याय माता के समान होते है।

उपाध्याय भगवंत से हमें विनय गुण की याचना करनी है। गौतम स्वामी को उपाध्याय पद धारी कहा जाता है। जो विनय के भंडार के रूप में प्रसिद्ध है।

उनके 25 गुण होते हैं। ऐसे विनय की मूर्ति, आचार्य की आज्ञा को शिरोधार्य करने वाले, उपाध्याय पद को हमारी वंदना।

साधु पद की आराधना

साधु जीवन, जगत के लिए आश्चर्य रूप है। साधकों की साधना में सदा सहायता करने वाले, अप्रमत्त गुण के धारक, लोक में रहे हुए सभी साधु भगवंतों को हमारी भावपूर्वक वन्दना।

साधु पद का वर्णन- साधना करे वो साधु, मौन रखे वो मुनि, स्वयं के मन पर नियंत्रण रखे वह साधु, कोई भी वचन व्यर्थ का उच्चरित न हो ऐसा ध्यान रखने वाले साधु, कुछ भी प्रवृत्ति-विरुद्ध न हो जाये इसकी जागरूकता रखने वाले साधु।

साधु यानि जंगम तीर्थ, साधु यानि जिन्दा जागता धर्म, साधु यानि करुणा की मूरत, साधु यानि नम्रता की निशानी, साधु यानि निर्लोभी, साधु यानि शुद्धि का अवतार, साधु यानि आँख में, चेहरे में, चलते, बोलते, कोई भी प्रवृत्ति करते हो, उनकी हर क्रिया में साधुता के दर्शन होते है।

जीवों का प्रतिपालक, सभी जीवों के लिए माता के समान, किसी जीव को किलामना (दु:ख) न हो इस बात का साधु विशेष ध्यान रखते है।

जिसे कोई बाहर जगत का हर्ष नहीं, जिसे कोई बाहर जगत का शोक नहीं, जिसे कोई बाहर जगत का अपमान नहीं, जिसे कोई बाहर जगत का सम्मान नहीं, इन सब भूमिका से ऊपर तीर्थंकरों की आज्ञा पालन करने वाले साधु होते है।

बाईस परिषहों को सहन करने में सदा तत्पर, सत्ताइस गुणों से सुशोभित, कृष्ण वर्ण के कषायों को जीतने के लिए प्रयत्नशील साधु पद को हमारा वंदन।

उनको किये वंदन से जीवन में संयम की साधना मिले, मुक्ति की आराधना मिले -ये प्रार्थना करनी है।

अरिहंत की भक्ति से मोक्षमार्ग की अपेक्षा रखनी है, सिद्ध की भक्ति से स्वस्वरूप प्राप्ति की अपेक्षा रखनी है, आचार्य की भक्ति से पंचाचार प्राप्ति की अपेक्षा रखनी है, उपाध्याय की भक्ति से विनय गुण की अपेक्षा रखनी है और साधु की भक्ति से मोक्षमार्ग की आराधना में सहायता की अपेक्षा रखनी है।

ऐसे महाप्रभावशाली, तारक पञ्च परमेष्ठी को हमारा वंदन।

सम्यग् दर्शन की आराधना

सम्यग् दर्शन पद की आराधना के लिए प्रथम उसके बारे में जानना आवश्यक है।

पांच दिन तक देव और गुरु तत्त्व की आराधना की,

समझी। अब धर्म तत्त्व की आराधना। धर्म को प्राप्त करके ही धर्मी बना जा सकता है।

धर्म तत्त्व में पहला है सम्यग् दर्शन। सम्यग् दर्शन के बिना सभी प्रकार का ज्ञान, मिथ्या ज्ञान कहलाता है। किसी भी प्रकार की क्रिया मिथ्या कहलाती है।

इसलिए सबसे जरुरी और मुख्य तत्त्व है सम्यग् दर्शन।

हमारे हृदय में देव गुरु के प्रति अखंड श्रद्धा जब प्रकट होगी तब हम सम्यक्त्वी कहलायेंगें। सम्यक् दर्शन यानि विचारों का शुद्धिकरण, अध्यवसायों का निर्मलीकरण, भावनाओं का ऊर्ध्वीकरण। सम्यक् दर्शन आते ही संसार के प्रति मोह कम हो जाता है। सम्यक दर्शन आते ही संयम, त्याग, धर्मक्रिया, आराधना की भावना होने लगती है। सम्यग् दर्शन ऐसा पद है जिसके बिना शुरू के पांच पदों में से कोई भी पद प्राप्त नहीं हो सकता। इसलिए मूल तत्त्व इसको कह सकते है।

अरिहंत देव की वाणी पर अविहड़ राग का नाम सम्यग् दर्शन है। और उस अविहड़ राग के कारण कोई भी झगड़ा, गाली आदि में भी समता भाव टिक सकता है। क्योंकि उसे केवल धर्म के प्रति राग है। संसार के प्रति राग वालों को संसार ही दिखता है। धर्म के प्रति राग वालों को मोक्ष दिखता है। सम्यग् दर्शन की प्राप्ति के बाद हम कह सकते है कि मैं मोक्ष में जाऊंगा। अर्थात् मोक्ष गति में रिजर्वेशन हो जाता है।

हमारे हृदय में सम्यग् श्रद्धा बिराजमान हो। देव गुरु धर्म की शुद्ध आराधना मेरे मन में रमती रहे। मेरे रोम-रोम में आपका वास हो। जैसे एक के अंक के बिना सैकड़ों शून्य का कोई मूल्य नहीं वैसे ही सम्यग् दर्शन के बिना साधना का कोई मूल्य नहीं है। सम्यक् दर्शन ही सभी मंजिलों की नींव है। नींव के बिना कोई भी मंजिल टिक नहीं सकती।

एक बार सम्यग् दर्शन मिलने के बाद असीमित संसार भी उस जीव के लिए सीमित बन जाता है। ये एक ऐसा अंजन है जिसको आँख में डालने पर हमारा अज्ञानान्धकार नष्ट हो जाता है। विवेक के चक्षु खुल जाते है। ऐसे मोक्ष पद प्राप्ति के लिए दर्शन पद को बारम्बार नमस्कार हो।

सम्यग्ज्ञान पद की आराधना

परमात्मा ने जो कहा है, गणधर भगवन्तों ने रचना की है वही सच्चा और नि:शंक ज्ञान है। संसार में जो भी दु:ख है, वह हमारे अज्ञान के कारण है। ज्ञान के अभाव में हम देव गुरु और धर्म की पहचान नहीं कर पा रहे है। उसी कारण हमारा चार गति में भटकना जारी है।

ज्ञान के अभाव में जो ग्रहण करना चाहिए उसे हम छोड़ देते हैं, तुच्छ चीजों को पकड़ के रखते हैं, सही और गलत का निर्णय भी हम अज्ञान के कारण नहीं कर पाते है। संसार छोड़ने के लिए है, संयम पालन के लिये है। फिर भी हम संसार को ही अपना मानकर जी रहे हैं।

परमात्मा कहते है कि हे जीव ! सबसे पहले तूं स्वयं को अच्छी तरह से जान। स्वयं का ज्ञान होगा तभी आत्मा का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

ज्ञान से हमें विवेक, विनय, जयणा, करुणा, अहिंसा आदि का बोध होता है। सद् ज्ञान के बिना जीव अपूर्ण है। हमें आज सद् ज्ञान की आराधना करनी है। जिससे हम सत्य-असत्य, भक्ष्य-अभक्ष्य, पुण्य-पाप आदि का सही ज्ञान प्राप्त कर सकें।

दर्शन ज्ञान आदि गुण है तो पञ्च परमेष्ठी गुण वाले है। पञ्च परमेष्टि की आराधना तो उनकी पूजा अर्चना से हो सकती है और हम सभी नवकार मंत्र के द्वारा करते भी है। जबकि दर्शन ज्ञान आदि की पूजा सेवा हम बाह्य किसी भी वस्तु से नहीं कर पाते है। उनकी आराधना के लिए हमें अपने हृदय का समर्पण करना होता है।

शास्त्रों में दर्शन ज्ञान आदि को रत्न दीपक की उपमा दी गयी है। कोई भी दीपक जलाना हो तो हमें बाती घी और दीपक का स्टेण्ड चाहिए। मगर रत्न दीपक को जलाने के

लिए कोई भी वस्तु नहीं चाहिए। वो दीपक खुद ही प्रकाशमय है। जब ऐसा रत्न दीपक हमारे हृदय में आ जाये तब समझना कि मेरे हृदय में परमात्मा की प्रतिष्ठा ही चुकी है।

ऐसे ज्ञान पद को हमारी वंदना।

सम्यक् चारित्र पद की आराधना

संसार और मोक्ष के बीच जो पुल है उसका नाम चारित्र। आठ कर्मों का नाश करना हो तो इस आठवें पद की आराधना करनी चाहिए।

चारित्र बिना कोई मोक्ष नहीं जा सकता है। वह चारित्र दो प्रकार का है। 1. देश विरति (श्रावक जो छोटे नियम व्रत का पालन करता है)। 2. सर्व विरति (साधु जो 5 महाव्रत का पालन करता है)।

राग और चारित्र में कट्टर शत्रुता है, दोनों में से कोई एक ही रह सकता है। हमारे हृदय में राग इतना जोरदार चिपक गया कि वैराग्य भाव टिक नहीं रहा है। चारित्र के लिये राग नहीं, वैराग्य चाहिए। विषयों का राग जब कम होता है तभी चारित्र की आराधना सरल रूप से हो सकती है।

चारित्र यानि अशुभ क्रियाओं का त्याग और शुभ क्रियाओं का अप्रमत्त रूप से पालन। और वही चारित्र कर्मक्षय का कारण है।

निज भावों में रमण करना भी चारित्र कहलाता है। चारित्र के स्वीकार से रंक व्यक्ति भी वंदनीय हो जाता है। चारित्री तीनों लोकों के लिए पूज्य बन जाता है। भिखारी ने भोजन के लोभ में दीक्षा ली। वो एक दिन के चारित्र-पालन से मरकर राजा बना। और सम्प्रति राजा बनकर जैन धर्म की सुंदर प्रभावना की। ऐसे महाप्रभावशाली चारित्र पद को और चारित्र पालन करने वालों को हमारी अनंतशः वंदना।

सम्यक् तप पद की आराधना

तप जीवन का अमृत है। जैसे अमृत मिलने पर मृत्यु का डर समाप्त हो जाता है वैसे ही हमारे जीवन में तप रूपी अमृत आने पर जीवन अमर हो जाता है।

दूध को तपाने से मलाई, अन्न को तपाने से स्वादिष्ट भोजन, सोने को तपाने से आभूषण बन जाता है। वैसे ही शरीर को तप की अग्नि द्वारा तपाने से हमारे कर्म रूपी मैल खिरने लगते हैं।

परमात्मा महावीर जानते थे कि उन्हें उसी भव में मोक्ष जाना है। फिर भी घाती कर्मों का क्षय करने के लिए दीक्षा लेकर एकमात्र तप धर्म का ही सहारा लिया। साढ़े बारह वर्ष तक भूमि पर नहीं बैठे। सोये नहीं। तप की साधना तभी फलीभूत हुयी और सभी घाती कर्मों का क्षय कर केवलज्ञान को प्राप्त किया।

तप, चारित्र को चमकाने वाला है। कर्म निर्जरा कराने वाला है। जीव मात्र तप की आराधना कर सके इसलिए ऐसा तप 12 प्रकार का बताया गया है।

अनशन (सभी प्रकार के आहार का त्याग)। ऊणोदरी (भूख से कम खाना)। खाने (वस्तुओं) में मर्यादा करना। रस वाली वस्तुओं का त्याग करना। और ज्यादा से ज्यादा आराधना करना। जैन शासन में नवपद का अनूठा स्थान है। संसार से बाहर निकलना हो तो नवपद की साधना से निकला जा सकता है। इस नवपद में साध्य (देव तत्त्व), साधक (गुरु तत्त्व) और साधन (धर्म तत्त्व) की सुन्दर रचना है। जिनका वर्णन करना हमारे लिए दुष्कर कार्य है।

तीर्थंकर भगवंतों ने, गणधर भगवंतों ने, आचार्य भगवन्तों ने भी हमें तप धर्म की आराधना करके उपदेश दिया। बिना तप के कोई भी चारित्रवंत आत्मा उपदेश नहीं देता। तप के द्वारा ही द्वारिका नगरी पर 12 वर्ष तक कोई संकट नहीं आया। तप हमारा भवोभव का साथी है ऐसा जानकर हमें तप धर्म में विशेष रूप से उत्साहित होकर प्रवृत्त होना चाहिए। जो तप करते है उनकी हृदय से अनुमोदन करना। और जो नहीं करते उनको तप का परिचय देना चाहिए।

जो तप करता है उनको तप में सहयोग करना। सहयोग नहीं कर सके तो अंतराय तो कभी नहीं देना। इस प्रकार तप की आराधना हमें करनी चाहिए।

धारावाहिक कथा 22

अधूरा सपना

पू. बहिन म. डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.

(गतांक से आगे...)

अपने परिजनों को आश्वस्त करके वंकचूल जंग में लडने के लिए तत्पर हो गया। ठीक समय पर युद्ध मैदान से बुलाने के लिए एक व्यक्ति आया। वंकचूल तो अपनी तेजस्वी और धारदार तलवार के साथ तैयार ही खड़ा था। बहिन सुंदरी ने अपने प्रिय भ्राता के तेजस्वी ललाट पर विजय की मंगलकामना करते हुए तिलक किया।

अपने तीनों साथियों पत्नी बहिन के साथ वंकचूल युद्ध के लिए नियत स्थल की ओर रवाना हुआ। वंकचूल अपनी जीत के प्रति जितना आश्वस्त था सुदंरी एवं युवरानी उतनी ही चिन्तित थी। उन्हें तो लगता था अपरिचित इस क्षेत्र में आकर किसी भी प्रकार का वैरभाव मोल लेना या अपनी ही जिन्दगी को खतरे में डालना कहां उचित है? अगर कहीं कुछ अनिष्ट हुआ तो हम तो कहीं के नहीं रहेंगें। पर हमारे सोचने से होना भी तो कुछ नहीं है। होगा तो वही, जो इन्होंने सोचा है।

विचारों की शृंखला के साथ पूरे समूह ने नियत स्थान पर प्रवेश किया। वहां सागर पहलवान पहले से उपस्थित था। जनता भी अति उत्साह के साथ उपस्थित थी। दोनों का उत्साह बढाने के लिए ढोली ढोल पर थाप भी दे रहे थे। सबसे वृद्ध पुरुष ने संघर्ष की घोषणा करते हुए कहा- ज्योंहि मैं हाथ का संकेत करूंगा, जंग प्रारम्भ हो जायेगी। सागर और इन मेहमान का आपस में मुकाबला होगा ओर जो जितेगा वही इस पल्ली का सरदार होगा।

दोनों ही योद्धा मैदान में आ पहुँचे। मुकाबला शुरू करने से पूर्व दोनों ने सर्वप्रथम अत्यंत गर्म जोशी से हाथ मिलाया। व्यक्तिगत किसी भी प्रकार की शत्रुता नहीं थी। यहाँ तो मात्रा या तो नेता बनने की होड़ थी या अपने बाहुबल का प्रदर्शन था। दोनों ने एक दूसरे की शक्ति को नापने का प्रयास किया। सागर में जोश था पर होश न था जबकि वंकचूल बुद्धिशाली एवं पराक्रमी था। दोनों ने अपना परिधान बदला और पहलवानी योग्य वस्त्र पहनकर नियतस्थल पर खडे हो गये।

उद्घोषक महोदय ने अपनी पैनी निगाहों से चारों तरपफ का वातावरण देखा और सब्र का प्याला छलके उससे पूर्व ही मुकाबले की घोषणा करते हुए कहा- आज इस परीक्षा का यह अंतिम पड़ाव है। हमारे इस अतिथि और सागर के बीच संघर्ष होगा। और जो जितेगा वही हमारे राज्य का मालिक बनेगा।

जनता ने हर्षध्वनि की। और दोनों की तलवारें म्यान से बाहर आ गयी। युवरानी और सुंदरी ने पलभर तो उस दृश्य को देखा और बाद में अपनी आँखें मूंदकर नवकार महामंत्र का स्मरण करने लगी।

सागर ने अंहकार के नशे में चूर होकर कहा- परदेशी! तैयार हो जाओ... मेरा खतरनाक प्रहार झेलने के लिये!

वंकचूल ने ठंडे कलेजे से उत्तर देते हुए कहा- मित्र! मैं तैयार हूँ। वंकचूल ने एक दिन पूर्व सागर के लडने का तरीका देखकर समझ लिया था कि यह अभिमान के नशे में अंधा हो गया है।

इसकी भुजाओं में बल जरूर राक्षस जैसा है पर उसकी मानसिकता में आवेश और आक्रोश का पागलपन है। आवेश के कारण कभी भी व्यक्ति विवेकपूर्वक निर्णय नहीं ले सकता। आक्रोश के कब्जा लेते ही सबसे प्रथम विवेक ही विदा हो जाता है। मात्र शौर्य अंध होता है। यह

तय है कि अंध व्यक्ति किसी भी कुएं में कभी भी गिर सकता है।

दोनों पहलवानों ने किसी भी प्रकार का युद्ध कवच धारण नहीं किया था, मात्र हाथ में तलवार थी।

वृद्ध व्यक्ति द्वारा प्रतियोगिता की घोषणा करते ही सागर ने उछलकर वंकचूल को लक्ष्यकर तलवार दे मारी। अगर वंकचूल तलवार की पैंतरेबाजी नहीं जानता तो बुरी तरह घायल हो सकता था पर यहाँ वह वंकचूल था जिसने पालने में भी खिलौने के रूप में तलवार और भाले ही देखे थे। उसने अपना शरीर झुकाकर तलवार के वार से खुद को बचा लिया।

वंकचूल ने निर्णय लिया- जीतने का सबसे आसान तरीका है प्रतियोगी को अपनी संपूर्ण शक्ति खर्च करने का अवसर दो। जब वह थककर चूर होगा तो स्वत: कमजोर पड़ जायेगा और उस समय आसानी से उसे वश किया जा सकता है।

सागर ने मूर्खों की तरह पूरी शक्ति लगाकर वंकचूल पर वार शुरू किये। वंकचूल मात्र बचाव करता रहा। वंकचूल की छलांग कौशल और उसकी चपलता देखकर सुंदरी और कमला चकित थी। वंकचूल तो जैसे हवा की तरह हरपल अपना स्थान बदल रहा था। मंद-मंद मुस्कुराते उत्तेजना सहित वंकचूल को देखकर सागर क्रोध से सुलग उठा। उसका चेहरा तन गया। मांसपेशियॉ बाहर आ गयी। चेहरा रक्तिम हो गया। उसका ताम्रवर्णी शरीर क्रोध की अधिकता से और अधिक श्यामल हो गया।

जब वंकचूल ने देखा- सागर का शरीर थक रहा है। उसकी निष्फलता उसको अधिक उत्तेजित कर रही है और तब उसने अपनी तलवारबाजी दिखाने का निर्णय लिया।

वंकचूल ने जब तलवार का दांव खेलना प्रारंभ किया तो दर्शक तो जैसे चकित हो गये। तलवार इतनी तेजी से धूम रही थी कि वह दिखना ही बंद हो गयी। सागर वंकचूल का कौशल देखकर घबरा गया।

कमला ने आज तक अपने स्वामी के दुर्गुण तो अवश्य देखे थे पर आज उसके हाथों का कौशल देखकर मुग्ध हुए बिना नहीं रही। वह एकटक अपने प्रियतम को प्रशंसा भरी निगाहों से देखते हुए नवकार महामंत्र का स्मरण करने लगी। स्वामी की विजय के लिये प्रार्थना करने लगी।

(क्रमश:)

विक्रमपुर 4 सितंबर। मणिधारी दादा गुरुदेव की जन्मजयंती के अवसर पर गुरुदेव की जन्मस्थली विक्रमपुर में श्री जिनदत्त-कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढ़ी द्वारा निर्मित मंदिर/दादावाड़ी में भव्य मेले का आयोजन गुरुभक्तों के विशाल समूह की उपस्थिति में संपन्न हुआ।

पर्यावरण जागरण

पर्यावरण के प्रति एक जैन साधु की आस्था

–पू. मुनि श्री मृगांकप्रभसागरजी म. सा.

पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. के शिष्यरत्न पूज्य उपाध्याय प्रवर श्री मनितप्रभसागरजी म. सा. जिन्होंने शताधिक पुस्तकों का लेखन किया है। उन्हीं पुस्तकों की शृंखला में पूज्यश्री द्वारा 'आओ बनें पर्यावरण के सारथी' पुस्तक का लेखन किया गया है। जिसके विमोचन का लाभ श्रीमान् सुरेशकुमारजी मनीषकुमारजी तातेड परिवार द्वारा लिया गया। प्रस्तुत पुस्तक के माध्यम से पूज्यश्री लिखते है कि हमारे चारों ओर का आवरण अर्थात् पर्यावरण। समग्र सृष्टि से जुडा हुआ अथवा ऐसा कहें कि समग्र विश्व जिससे जुडा हुआ है ऐसा अभिन्न अंग पर्यावरण है। पर्यावरण के अभाव में हम सब अधूरे हैं क्योंकि जिन-जिन वस्तुओं का हम उपयोग करते है, वो सब पर्यावरण की ही देन है। पर्यावरण के बिना जीवन संभव नहीं क्योंकि इसी से हमारी सारी आवश्यकताएँ यथा भोजन, कपडा, मकान आदि पूर्ण होती हैं।

चिन्तनीय प्रश्न यह है कि पर्यावरण के प्रति हमारे दायित्व क्या है? जल का उपयोग, प्लास्टिक के दुरुपयोग पर रोक, ओजोन परत का क्षय, पेडों की अंधाधुंध कटाई, बढती जनसंख्या जैसी विविध समस्याएँ आज हमारे देश में व्याप्त है। इन्हीं समस्याओं से मुक्त बनने के लिए पूज्यश्री ने प्रस्तुत पुस्तक में पर्यावरण से जुड़े अनेक विषयों को सम्मिलित करते हुए सुन्दर हिंदी भाषा के माध्यम से आलेखन किया हैं।

इसी शृंखला में पर्यावरण और धर्म की एकरूपता बताते हुए वे लिखते हैं कि पर्यावरण का पहला बिन्दु है- छोटे से छोटे जीव के अस्तित्व को स्वीकृति व सम्मान देना। जैन धर्म के पुरोधा परमात्मा महावीर न केवल अध्यात्म के प्रस्तोता थे अपितु पर्यावरण के संरक्षक भी थे। यदि परमात्मा महावीर और उन्हीं के सिद्धांतों के अनुसार चलने वाले साधु-साध्वी भगवंतों का जीवन समझ लें तो निश्चित ही पर्यावरण के साथ सच्ची मित्रता कर पाने में हम एकजुट हो पायेंगें।

पर्यावरण से जुडी अनेक समस्याओं में से एक है- जल का अभाव। हमें यह जानते हुए आश्चर्य होगा कि दुनिया भर में एक अरब से ज्यादा लोगों को स्वच्छ पेयजल नहीं मिल पाता है। यह कहते हुए अत्यंत खेद होता है कि सुविधावादी जीवन शैली में जल के सदुपयोग की शिक्षा को हमने मानो हाशिये पर रख दिया है। भोगवादी लोग जहाँ जल के अपव्यय से कतराते नहीं वहीं दूसरी ओर भारत में हजारों बच्चों की मृत्यु का मूल कारण स्वच्छ जल का अभाव ही हैं।

वर्तमान में पर्यावरण प्रदूषण की समस्याएँ निरंतर समुद्र की भाँति अथाह होती जा रही हैं। प्लास्टिक के विषय में अगर बात की जायें तो भारत में एक दिन में लगभग 20 हजार टन प्लास्टिक कचरा पैदा होता है। जिसमें से 60% ही कचरा री-साइकिल हो पाता है। सस्ता व सौविध्यपूर्ण कहलाने वाला प्लास्टिक स्वार्थी मानस की लालची उपज है। प्लास्टिक खत्म होने में हजारों वर्ष का समय लेता है, इस लिहाज से वह परमाणु बम से भी अधिक खतरनाक है। इतना ही नहीं वायु प्रदूषण में भी इसका बहुत बडा हाथ है, क्योंकि यह जलाने पर अपार कार्बन को पैदा करता हैं।

इन सभी समस्याओं मे शिरमौर यदि कोई है तो वह है- वृक्षों की अंधाधुंध कटाई। वृक्ष हमारे प्रत्यक्ष उपकारी है। वृक्षों का जीवन किसी अपेक्षा से मनुष्य से भी ज्यादा कृतकृत्य हैं, क्योकि वृक्ष हमें देते हैं- प्राणवायु, फल-फूल, छाया इत्यादि। मिट्टी के कटाव को रोकने में भी वृक्ष परम सहायक हैं।

परंतु आज का मानव अपने स्वार्थ के लिए, उद्योग धंधों की स्थापना में, चार लाईन-छह लाईन सडक निर्माण में निर्दयी बनकर वृक्षों की कटाई कर रहा है। अरे!

(शेष पृष्ठ 28 पर)

जयपुर में पर्युषण महापर्व का ठाठ

जयपुर 1 सिंतबर। पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष आचार्य प्रवर श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा 9 की पावन निश्रा एवं पूजनीया साध्वी श्री मणिप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा के पावन सानिध्य में जयपुर नगर में चातुर्मास की आराधना अत्यन्त आनंद व उत्साह के साथ चल रही है।

पूज्य आचार्यश्री के प्रवचनों में जयपुर वाले बडी संख्या में उपस्थित होते हैं। पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व की आराधना अत्यन्त आनंद मंगल व उत्साह के साथ संपन्न हुई।

पर्युषण महापर्व में पूज्य आचार्यश्री के शिष्य पूज्य मुनि श्री मलयप्रभसागरजी म. एवं पूज्य मुनि श्री मुकुलप्रभसागरजी म. ने अट्ठाई तप की तपस्या की। इससे पूर्व सामूहिक अट्ठाईयों के आयोजन में पूज्य आचार्यश्री के शिष्य पूज्य मुनि श्री मुकुन्दप्रभसागरजी म. ने अट्ठाई की तपस्या की थी।

तपस्वी मुनियों का पारणा अत्यन्त आनंद के साथ संपन्न हुआ। पारणे का लाभ मूल बीकानेर वर्तमान में जयपुर निवासी श्री पारसचंदजी विकास आकाश खजांची परिवार ने लिया।

पर्युषण महापर्व की आराधना करने के लिये बाहर से लगभग 300 आराधकों का आगमन हुआ। श्री श्रीपालजी डोसी चेन्नई, श्री प्रकाशचंदजी लोढा चेन्नई, श्री मोतीचंदजी गुलेच्छा कुनूर, श्री पिन्टुजी गोलेच्छा धमतरी, मुमुक्षु श्री महावीर मालू धोरीमन्ना, श्री दीपकजी सेठिया बालोतरा ने अट्ठाई के साथ चौसठ प्रहर का पौषध किया।

श्री नवीनजी भांडिया ने मासक्षमण की तपस्या की। इससे पूर्व श्री भांडियाजी ने 9 मासक्षमण किये थे, यह उनका दसवां मासक्षमण था। संगीताजी भंसाली ने 15 उपवास किये।

श्री राजीव भंडारी, मुमुक्षु भरत गांधी, रमेश एम. गोलछा, अरुण संकलेचा, खुशीरामजी हाला वाले, अशोकजी डागा, प्रसन्नजी भाण्डिया, नवीनजी कानुंगो, प्रतीकजी पारख, संजयजी अग्रवाल, कु. नेहा बोहरा, मंजु बोथरा, अरुणाजी बोरदिया, आयुषीजी लोढा, श्रीमती चंद्राबाई, प्राचीजी डागा, मंजुजी डागा, भारतीजी चोरडिया, अंजलिजी छाजेड, प्रमिलाजी सिंघड आदि ने अट्ठाई की तपस्या की।

देराउर दादावाडी में प्रतिष्ठा

जयपुर 1 सितंबर। दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरि के महाप्रयाण स्थल की स्मृति में निर्मित प्रसिद्ध देराउर दादावाडी में गुरुदेव के प्राचीन चरणों की प्रतिष्ठा दिनांक 20 नवंबर 2022 को होगी।

यह प्रतिष्ठा पूज्य गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म. आदि ठाणा की निश्रा में एवं पू. साध्वी श्री मनोहरश्रीजी म. पू. साध्वी श्री मणिप्रभाश्रीजी म. एवं पू. प्रवर्तिनी साध्वी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा की सानिध्यता में संपन्न होगी। दि. 20 नवंबर को प्रात: 18 अभिषेक, प्रतिष्ठा के साथ बडी पूजा भी रखी गई है। प्रतिष्ठा समारोह का लाभ श्री ऋषभकुमारजी अभिषेकजी अभिनवजी चौधरी परिवार ने लिया है। –सुनील बैगानी, मंत्री

भानपुरा में तपस्या

भानपुरा 1 सिंतबर। पू. खानदेश रत्न शिरोमणि प्रवर्तिनी श्री जिनश्रीजी म. की शिष्या अष्टापद तीर्थ प्रेरिका पू. साध्वी जिनशिशुप्रज्ञाश्रीजी म.सा एवं पू. साध्वी सुप्रज्ञाश्रीजी म. आदि ठाणा के चातुर्मास के उपलक्ष में भानपुरा खरतरगच्छ जैन संघ में तपस्या का सुंदर माहौल बना। पू. साध्वी श्री प्रज्ञाश्रीजी म.सा. के ९७वीं ओली जी के पारणे पर लोगों में तप अनुमोदना का माहौल बना।

श्रीमती मधुजी सुमीतजी भण्डारी ने श्रेणीतप, श्रीमान् नीतिन जी नाहार ने सिद्धि तप, श्रीमती आशा जी कोचर, श्रीमती आशा जी चौरडीया, श्रीमती बबीता जी गांग, श्रीमती सुनीता जी कोचर ने मासखमण, विशालजी चौरडीया ने अठाई, कु. अमीया जी चौरडिया ने ग्यारह उपवास, साथ ही विहरमान तप, पंच परमेष्ठी तप, अक्षयनिधि तप में भी तपस्वियों ने भाग लिया।

पाटन में तपस्या

पाटन 1 सितंबर। खरतरगच्छ सहस्त्राब्दी भवन में पूज्या साध्वीवर्या प्रियंकराश्रीजी म. आदि ठाणा एवं पूज्या साध्वीवर्या श्रुतदर्शनाश्रीजी म. आदि ठाणा का चातुर्मास गतिमान है। श्रुताराधनालक्षी चातुर्मास में अध्ययन के साथ तप धर्म की भी सुंदर प्रभावना हुई। पू. साध्वी प्रियंकराश्रीजी म. के वर्धमान तप की 16वीं ओली, पू. साध्वी श्रुतदर्शनाश्रीजी म. के 55वीं ओली, पू. साध्वी प्रार्थनाश्रीजी म. पू. साध्वी प्रतिभाश्रीजी म. के 12वीं ओली की आराधना शातापूर्वक पूर्ण हुई। पू. साध्वी सुज्ञप्रभाश्रीजी म. के मोक्षतप की आराधना पूर्ण हुई।

केयुप द्वारा पर्वाधिराज पर्युषण आराधना

अखिल भारत 1 सितंबर। खरतरगच्छ युवा परिषद् द्वारा पर्युषण आराधना निम्न स्थानों पर हर्षोल्लास पूर्वक करवाई गई। दिल्ली- कु. भावना संखलेचा, कु. साक्षी सिंघवी, चैन्नई- भूपतजी चौपड़ा, शैलेशजी ललवानी, हावड़ा- प्रदीपजी श्रीश्रीश्रीमाल, चम्पालालजी वाघेला, कलकत्ता (जिनेश्वरसूरि भवन)- प्रणय श्रीश्रीश्रीमाल, प्रेम देसाई, हर्ष श्रीश्रीश्रीमाल, उज्जैन- मदनजी कोचर, कीर्तिकुमार गोलेच्छा, शैलू (आर्वी)- सौ. किरणजी सिंघवी, सौ. निर्मला नाहर, आर्वी- प्रतीक कोचर, अक्षय जीरावला, इरोड- कु. श्रद्धा लुंकड़, कु. निशा बोथरा, तिरुपुर- रमेशजी लुंकड़, रमेशजी छाजेड़, नागौर- कु. दिव्य बोथरा, कु. सोनल डूंगरवाल, भिवंडी- राजूजी वडेरा, रमेशजी मालू कानासर, कल्प सिंघवी, दोंडायचा- कु. कशिशजी, कु. अमीशा, शहादा- कु. अंकिता, कु. मुस्कान, कु. पल श्रीश्रीश्रीमाल, गोवाहटी- हरसु ललवानी, ऋषभ कवाड़, कडलूर- गौरव कवाड़, वर्धमान बुरड, कोयम्बटूर- प्रेम कवाड़, कुणाल लुणावत, विशाखापत्तनम- उज्ज्वलजी कोचर, जैनम संचेती, जलगांव जामोद- सौ. मीनाजी वैद, झालरापाटन- कल्पेश भाई अरनाईया, कुणाल, खापर- बाबुलालजी ललवानी. सौ. प्रेमलताजी ललवानी, पालीताना- मुमुक्षु संदीप, मुमुक्षु आकाश लूनिया।

सभी स्वाध्यायियों ने अपने संघों में उत्साह पूर्वक आराधना करवाई। स्थानिय सकल संघ के साथ खुद ने भी यथाशक्ति हर कार्य में भाग लेते हुए संघ के सभी सदस्यों को धर्म में जोडा। अष्टान्हिका एवं कल्पसूत्र जी वांचन-श्रवण से संघों में उल्लास एवं उत्साह का वातावरण बना। प्रतिदिन रात्रि प्रतिक्रमण, प्रवचन, शिविर, सायं प्रतिक्रमण, धार्मिक प्रतियोगिता आदि कार्यक्रम आयोजित किये गये। जिसमें सभी की सराहनीय उपस्थित रही। सभी ने केयुप के स्वाध्याय प्रकल्प की अनुमोदना करते हुए सम्मान किया एवं पूज्य गच्छाधिपतिश्री का आभार माना।

तिरपातुर चातुर्मास

तिरपातुर 1 सितंबर। पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती स्थाविर मुनिराज श्री मुक्तिप्रभसागरजी म. गणिवर्य श्री मनीषप्रभसागरजी म. आदि ठाणा 4 एवं गच्छगणिनी पू.साध्वी श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूज्या साध्वी प्रीतिसुधाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 3 की पावन निश्रा में तिरपातुर में पर्वाधिराज पर्युषण की आराधना उल्लासपूर्वक संपन्न हुई। जिसमें कई आराधकों ने तपस्या की। 26 अट्ठाइयाँ, 64 प्रहरी पौषध एवं कई आराधकों ने मौन के साथ इस पर्युष्ण की आराधना की।

पर्युषण के दौरान शंखेश्वर पार्श्वनाथ प्रभु की प्रतिमा का आगमन नगर में हुआ और आठ दिन प्रभु की भक्ति हुई। कल्पसूत्र का प्रवचन बहुत सरल भाषा में श्रद्धालुओं को समझाया और कहा कि हमें तीर्थकरों के जीवन चरित्र से प्रेरणा लेनी है। बालमुनि श्री मतीशप्रभसागरजी म.सा ने अठाई की तपस्या की। –पूजा कपिल मेहता

महरौली में मेला

महरौली 4 सितंबर। लाखों भक्तों के श्रद्धा के केन्द्र द्वितीय दादा गुरुदेव मणिधारी श्री जिनचंद्रसूरिजी के 882वें जन्मोत्सव पर भक्ति संध्या कई रंगारंग कार्यक्रमों के साथ संपन्न हुई। इस पावन प्रसंग पर अपनी हाजरी लगाने का मौका मिलना परम सौभाग्य की बात है। गुरुदेव की जन्म जयंती अखिल भारतीय खरतरगच्छ महिला परिषद दिल्ली रूपनगर शाखा ने अपनी गरिमामय प्रस्तुति के साथ बड़े ही हर्षोल्लास से मनाई।

चौहटन में विविध महोत्सव

चौहटन 3 अगस्त। पूज्य साध्वी कल्पलताश्रीजी म. आदि ठाणा की निश्रा में श्री शान्तिनाथ प्रवचन हॉल में आयोजित खरतरगच्छ स्थापना दिवस के उपलक्ष में समारोह का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पूज्या साध्वी कल्पलताश्रीजी म. की प्रेरणा से चौहटन में अनेक लड़कियों ने शादी में प्री-वैडिंग शूट नहीं कराने का संकल्प लिया तो नवयुवकों ने नशा मुक्ति की धारणा को ग्रहण किया। भगवान नेमिनाथ जन्म कल्याणक के भव्यातिभव्य आयोजन और भावपूर्वक तरीके से मनाए जाने की सराहना की।

पू. साध्वी अमितयशाश्रीजी म. और पू. साध्वी शीलांजनाश्रीजी म. ने जिनेश्वरसूरि द्वारा स्थापित खरतरगच्छ के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए इसकी गौरव गाथा बताई और लोगों से इसकी महान परम्पराओं का पालन कर आदर्श जीवन जीने का आह्वान किया तथा गच्छ की एकता को सदैव बनाए रखने का संदेश दिया।

समारोह के अंत में जैन श्रीसंघ के अध्यक्ष हीरालाल धारीवाल ने आगन्तुक अतिथियों का श्रीसंघ की ओर से बहुमान किया।

जहाज मंदिर में पर्युषण पर्व मनाया

मांडवला 1 सितंबर। जहाज मंदिर परिसर में पर्युषण पर्व पर प्रतिदिन पूजा, रात्रि में भक्ति भावना एवं आठों दिन अंगरचना (आंगी) रखी गई। जिसमें आठों दिन अलग-अलग भक्तों द्वारा लाभ लिया गया।

दिनांक 28.08.2022 को भगवान महावीर स्वामी का जन्म वाचन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर ट्रस्टी श्री सुरजमलजी देवडा धोका, रामरतनजी छाजेड, पारसमलजी बरडिया, व्यवस्थापक मनोज कावडिया एवं स्टॉफ सदस्य उपस्थित रहे। पर्युषण पर्व के आठों दिन श्री पार्श्वनाथ पंचकल्याणक पूजा, श्री नेमीनाथ पंचकल्याणक पूजा, श्री आदिनाथ पंचकल्याणक पूजा, श्री शांतिनाथ पंचकल्याणक पूजा, श्री महावीर स्वामी षट्कल्याणक पूजा, नवपद पूजा, अंतराय कर्म पूजा व नवानु प्रकारी पूजा का आयोजन किया गया।

खरतरगच्छ बालिका परिषद का हुआ गठन

सूरत 3 अगस्त। पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी पू. साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. की शिष्याएं पू. साध्वी मयूरप्रियाश्रीजी म. आदि ठाणा-5 की निश्रा में 03.08.22 को खरतरगच्छ दिवस पर शपथ ग्रहण का आयोजन रखा गया। दि. 09.08.22 को खरतरगच्छ बालिका परिषद का विस्तार किया गया। गुरुवंदना से प्रारंभ सभा की कार्यवाही केयुप के राष्ट्रीय सह-सचिव गौतम जैन कगाऊ व केयुप पर्वत पाटिया के अध्यक्ष गणपत भंसाली ने की।

सभी बालिकाओं को गच्छ की गरिमा व परम्परा को बनाये रखने के साथ-साथ गच्छाधिपतिश्री की आज्ञा को शिरोधार्य रखकर भाव से गच्छ के गुरुभगवंतों की विहार, वेयावच्च, धर्म क्रिया में जुड़कर अपनी आत्मा का कल्याण कैसे हो उस पर चिंतन करना है। सभी बालिकाओं ने गुरुदेव के प्रति श्रद्धा भाव व गच्छ विकास में योगदान देने का आश्वासन दिया।

गौतम जैन कगाऊ व गणपतजी भंसाली ने सभी को धन्यवाद के साथ एक होकर आगे बढ़ना व कोई भी बात हो तो आपस में समझकर उसका हल निकालने का मंत्र दिया। गौतम कगाऊ ने सर्व सम्मति से पदों की घोषणा इस प्रकार की। अध्यक्षा:- डिम्पल धारीवाल, उपाध्यक्षा:-दीपिका बोथरा, सचिव:- लब्धि संखलेचा, कोषाध्यक्षा:- चेतना लूणिया, प्रचार मंत्री:- मनीषा शाह मालू। सभी सदस्यों व पदधारियों को बधाई।

हैद्राबाद में समारोह

हैद्राबाद 00 अगस्त। श्री महावीर भवन में पू. प्रखर व्याख्यात्री श्री हेमप्रभाश्रीजी म. की शिष्या पूज्या साध्वी प्रियंवदाश्रीजी म., पू. साध्वी शुद्धांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा की निश्रा में अहो ब्रह्मचर्य नामक संगीतमय प्रस्तुति श्री मोहनजी मनोजजी गोलेच्छा द्वारा दी गई। जिसमें ब्रह्मचर्य के बारे विस्तार से भावपूर्वक संवेदना प्रकट की गई। लोगों में ब्रह्मचर्य के प्रति अनुठी लगन प्रकट हुई।

श्री जिनेश्वर मंडल के स्थापना दिवस निमित्त राष्ट्रीय एवं जैन ध्वजारोहण मंडल के सदस्यों एवं श्री संघ के ट्रस्टी गणों द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन पू. साध्वी योगांजनाश्रीजी म. के ५६वीं ओली की पूर्णाहुति एवं संयम तप की अनुमोदनार्थ रखा गया।

पू. साध्वी शुद्धांजनाश्रीजी म. ने आजादी के इस अमृत महोत्सव की खुशियां मनाते हुए कहा कि हमको आजादी अंग्रेजों से तो मिल गई हैं पर उनकी संस्कृति से नहीं मिली। हमें भारतीय संस्कृति अपनानी चाहिए। उन्होंने कहा कि ब्रह्मचर्य व्रत को धारण करने से जीवों की हिंसा से बचा जा सकता हैं।

मोहनजी मनोजजी गोलेच्छा का बहुमान समिति के संयोजक कांतिलाल संकलेचा, विक्रम ढड्ढा एवं खरतरगच्छ संघ के अध्यक्ष ललित संकलेचा, सुरेश, उत्तम एवं लाभार्थी खीमराज नेनमलजी बाफना हिरोनी परिवार द्वारा किया गया। कार्यक्रम का लाभ गौतमचंद आकाशकुमार हुंडिया परिवार ने लिया। -गौतम गोलेच्छा

श्री जिनहरि विहार में पर्युषण का आयोजन

पालीताना 1 सितंबर। पूज्य अवंती तीर्थोद्धारक गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. के शिष्य एवं आज्ञानुवर्ती पूज्य मुनिराज श्री मौनप्रभसागरजी म., पूज्य मुनिराज श्री मोक्षप्रभसागरजी म., पूज्य मुनिराज श्री मननप्रभसागरजी म. एवं पूज्या महत्तरा श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा, पूज्या साध्वी प्रियदर्शनाश्रीजी म. आदि ठाणा, पूज्या साध्वी श्रद्धांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा, पूज्या साध्वी दर्शनप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा, पूज्या साध्वी शांतरेखाश्रीजी म. के पावन सांनिध्य में पर्युषण का उल्लास रहा।

श्री जिनहरि विहार धर्मशाला वर्ष सन् 2022 के चातुर्मास वैयावच्च एवं पर्युषण महापर्व का लाभ निम्नलिखित परिवारों ने प्राप्त किया। श्री जिनहरि विहार समिति इनके सहयोग की अनुमोदना करती है एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना करती है। लाभार्थी परिवारों के नाम इस प्रकार है–

श्रीमान् संघवी विजयराजजी चम्पालालजी डोसी परिवार बेंगलोर,

श्रीमान् संघवी अशोककुमारजी मानमलजी भंसाली परिवार अहमदाबाद,

श्रीमान् बाबुलालजी भुरचंदजी लूणिया परिवार धोरीमन्ना अहमदाबाद,

श्रीमान् जसराजजी नेमीचंदजी छाजेड़ परिवार इचलकरंची,

श्रीमान् रतनलालजी हितेशकुमारजी बोहरा हालावाला परिवार बाड़मेर अहमदाबाद,

श्रीमान् संघवी रतनलालजी मिश्रीमलजी बोथरा परिवार विशाला अहमदाबाद,

श्रीमान् पुखराजजी सुमेरमलजी तातेड़ परिवार पादरु सेलम अहमदाबाद,

श्रीमान् बाबुलालजी केशरीमलजी बोथरा परिवार बाड़मेर अहमदाबाद,

श्रीमान् अशोककुमारजी केशरीमलजी बोहरा परिवार कोठाला अहमदाबाद,

श्रीमान् संघवी माणकचंदजी अरुणकुमारजी ललवाणी परिवार सिवाना अहमदाबाद इचलकरंजी,

श्रीमान् हस्तीमलजी सायरमलजी रेखावत परिवार नागौर अहमदाबाद,

श्रद्धेय मीरादेवी मूलचंदजी बोहरा परिवार ह. रमेश बोहरा चौहटन अंकलेश्वर,

श्रीमती मोहिनीदेवी समरथमलजी रांका परिवार गोल उम्मेदाबाद,

श्रीमान् ज्ञानचंदजी, पदमचंदजी पंकजजी कोठारी परिवार,

सौभाग्यवती शांतिदेवी बाबुलालजी छाजेड़ परिवार बाड़मेर मुंबई,

श्रीमान् कुशलराजजी पृथ्वीराजजी गुलेच्छा परिवार मोकलसर बेंगलोर,

श्रीमान् अमृतलालजी शिवलालजी बुरड़ परिवार सांचोर अहमदाबाद,

श्रीमान् भीखमचंदजी चंदादेवीजी लूणिया परिवार कवर्धा छत्तीसगढ़,
श्रीमान् भंवरलालजी विरधीचन्दजी छाजेड़ परिवार बाड़मेर मुंबई,
श्रीमान् मानमलजी रवीन्द्रकुमारजी दुग्गड़ परिवार नागौर मुंबई,
श्रीमती चईतिदेवी नीलमचंदजी माणकचंदजी डोसी परिवार नागौर चेन्नई,
श्रीमान् हुलासमलजी गौतमचंदजी कोठारी परिवार नागौर,
श्रद्धेय रोहितकुमार सुमित्रादेवी मांगीलालजी मालू बाड़मेर मालेगाँव
जन्म वांचन के अवसर पर लक्ष्मीजी के लाभार्थी- संघमाता इचरजबाई चम्पालालजी डोसी खजवाणा बैंगलोर एवं पारणाजी घर ले जाने के लाभार्थी श्री मांगीलालजी आसुलालजी मालू चौहटन सूरत तथा श्री सम्पतराजजी विरधीचन्दजी धारीवाल सनावड़ा सूरत ने विशिष्ट चढावा बोलकर प्राप्त किया।

पर्व पर्युषण में अखिल भारत से अनेक जिनशासन अनुरागी महानुभावों का पदार्पण हुआ। जिनमें संघवी श्री विजयराजजी डोसी खजवाना, श्री घेवरजी धारीवाल अहमदाबाद, श्री ओमजी धारीवाल अहमदाबाद, श्री भूरजी धारीवाल अहमदाबाद, श्री रतनजी धारीवाल अहमदाबाद, श्री जसराजजी छाजेड़ इचलकरणजी, श्री पुरुषोतमजी सेठिया बालोतरा, श्री रमेशजी बोहरा जोधपुर, श्री सम्पतजी धारीवाल सूरत, श्री गौतमजी हालावाला सूरत, श्री रतनलालजी वडेरा बाडमेर, श्री बाबूलालजी लुणिया अहमदाबाद, श्री दिलीपजी जैन नासिक, श्री हनुमानजी बोहरा जोधपुर, श्री सुमेरजी तातेड़ सेलम, श्री योगराजजी चैन्नई, श्री हस्तीमलजी रेखावत अहमदाबाद, श्री गौतमजी कोठारी नागौर, श्री महावीरजी कोठारी दुर्ग, श्री बाबूलालजी मालू सूरत, श्री पारसमलजी बोहरा सूरत, श्री बाबूलालजी टी. बोथरा बाडमेर, श्री बाबूलालजी छाजेड़ कांदावाला सूरत, श्री महावीरजी मेहता बेंगलोर, श्रीमती उषाजी मांगीलालजी वडेरा पूर्व चैयरमैन बाडमेर, श्री संजयकुमारजी वगतावरचन्दजी बाफना पादरू, श्री नेमीचन्दजी चौपड़ा हैदराबाद, श्रीमती मयूरीबेन पूना, श्री आसकरणजी लुणावत हैदराबाद, श्री कान्तिलालजी राठौड़ लुणावाडा, श्रीमती रक्षाबेन चौकसी वडोदरा, श्री पारसमलजी संखलेचा जोधपुर, श्री प्रकाशभाई भावसार वडोदरा, श्री सागरमलजी जैन मुंबई, श्री धर्मचन्दजी छाजेड़ जोधपुर, श्री भूरचन्दजी वडेरा बाडमेर, श्री जयन्तीलालजी सीतामहु, श्री प्रकाशजी बोहरा जयपुर, श्री अशोकजी लोढा पाली, श्रीमती विमलादेवी डोसी नागौर, श्री मांगीलालजी मालू सूरत, झरना वोरा सिंगर अहमदाबाद, श्री गौतमजी वडेरा इचलकरणजी, श्री सम्पतराजजी भुजिंग सूरत, श्री कपिलजी डोसी चैन्नई, श्री रतनलालजी बोथरा त्रिपुर, श्री प्रदीपजी बोराणा पूना, श्री अशोकजी बोहरा बाडमेर, श्री बाबूलालजी पोकरचन्दजी बोथरा गुडामालाणी, श्री सम्पतजी बोथरा दिल्ली, श्री सोमिल जनक शाह अहमदाबाद, श्री मोहनलालजी छाजेड़ नवसारी, श्री ज्ञानचन्दजी कोठारी जयपुर, श्रीमती बसन्तीबेन अहमदाबाद, श्री किशोरभाई झवेरी सूरत, श्री सम्पतराजजी मेहता बैंक वाले बाडमेर, श्री उतमचन्दजी शाह मुंबई, श्रीमती चमेलीबाई नागौर आदि ने आराधना में भाग लिया।

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट जहाज मन्दिर द्वारा हर साल दीपावली पर पंचांग प्रकाशित होते हैं। जिन्हें भी पंचांग प्रकाशित करवाने हों वे जहाज मन्दिर कार्यालय अथवा ट्रस्टी से संपर्क करावें।
संपर्क: जहाज मन्दिर पेढी 964 964 0451, गौतम संकलेचा 94440 45407, मुकेश प्रजापत 98251 05823

(शेष पृष्ठ 22 का)

पर्यावरण के प्रति एक जैन साधु की आस्था

जिस वृक्ष को उगाने में हजारों-लाखों वर्ष लग जाते हैं, वर्तमान में सुविधावादी संस्कृति के कारण कुछ पलों में ही वह वृक्ष उखाड दिया जाता हैं।

प्रस्तुत पुस्तक का अध्ययन कर हम पर्यावरण के सच्चे सारथी बने। पर्यावरण से ही हमारा जीवन हैं, इसकी सुरक्षा हमारा संकल्प बने। इन्हीं दृढ संकल्पों से हम पर्यावरण से जुडे, यही कामना।

जयपुर मोहनवाडी में प्रतिमा प्रवेश समारोह

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. आदि मुनि मंडल एवं पूजनीया साध्वी श्री मणिप्रभाश्रीजी म. पू. प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. आदि साध्वी मंडल के पावन सानिध्य में मोहनवाडी में निर्मित हो रहे श्री आदिनाथ प्रासाद में बिराजमान होने वाली प्रतिमाओं के नगर प्रवेश का भव्यातिभव्य आयोजन किया गया।

यह ज्ञातव्य है कि इस मंदिर का निर्माण प्रवर्तिनी श्री विचक्षणश्रीजी म. की शिष्या पू. मरुधर ज्योति साध्वी श्री मणिप्रभाश्रीजी म. की प्रेरणा से हो रहा है।

इसकी प्रतिष्ठा 11 दिसम्बर 2022 पौष वदि 3 रविवार को संपन्न होगी। प्रतिमाओं के प्रवेश की शोभायात्रा का प्रारंभ सांगानेरी गेट से किया गया। शोभायात्रा में हजारों श्रद्धालु सम्मिलित हुए। पूरे जयपुर में एक विशेष भक्ति का वातावरण बना। नूतन प्रतिमाओं के दर्शन के लिये लोग उमड पडे थे।

प्रतिमाओं का मंगल प्रवेश मोहनवाडी अरिहंत वाटिका में करवाया गया।

प्रवेश के पश्चात् प्रवचन में पूज्य गुरुदेवश्री ने भक्ति की महिमा पर प्रवचन फरमाया। इस अवसर पर साध्वी श्री मणिप्रभाश्रीजी म. आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

श्री मंगलप्रभातजी लोढा मंत्री बने

मुंबई निवासी विधायक श्री मंगलप्रभातजी लोढा को महाराष्ट्र सरकार द्वारा केबिनेट मंत्री बनाया गया है। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री श्री एकनाथ शिंदे ने मंत्री मंडल का विस्तार करते हुए श्री लोढाजी को यह जिम्मेदारी दी। वे मुंबई भाजपा के अध्यक्ष हैं। उन्हें पर्यटन मंत्रालय, कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय (महाराष्ट्र) का मंत्री बनाया गया है।

श्री लोढाजी अ.भा. जैन श्वे. खरतरगच्छ महासंघ के अध्यक्ष रहे हैं। जहाज मंदिर परिवार की ओर से उन्हें हार्दिक बधाई एवं अभिनंदन।

(शेष पृष्ठ 07 का)

मैसूर (दादावाड़ी)

नगर में लगभग 1200 जैन परिवारों की बस्ती है, जिनमें 700 परिवार मंदिरमार्गी, 350 परिवार स्थानकवासी, 150 परिवार तेरांपथी एवं 100 परिवार दिगम्बर परम्परा का अनुसरण करते हैं।

साधु-साध्वी जी के लिए दादावाड़ी के पृष्ठ भाग में कुशल भवन निर्मित है। आगंतुकों के लिये महावीर भवन में व्यवस्था है, जो कि दादावाड़ी से 1.5 कि.मी. दूरी पर स्थित है। इतनी ही दूरी पर अशोका रोड पर मूर्तिपूजक संघ, मैसूर द्वारा संचालित नियमित भोजनशाला है।

मंदिर के बिल्कुल सम्मुख स्थित पेढ़ी पर मेरूशिखर बनाया हुआ है जो आकर्षक लगता है।

मात्र 18 कि.मी. की दूरी पर वृंदावन उद्यान, आधा कि.मी. दूरी पर मैसूर पैलेस आदि अनेक भ्रमणीय स्थल हैं। दादावाड़ी प्रतिष्ठा के समय यहाँ पर दो दीक्षाएँ हुई थी, जो वर्तमान में प्रवर्तिनी श्री चन्द्रप्रभा श्री जी म.सा. के पास साधनारत हैं।

उपरोक्त स्वतंत्र दादावाड़ी के अतिरिक्त नगर के विख्यात श्री सुमतिनाथ जिनालय में नियमित आने वाले दादा गुरुदेव भक्तों ने अपने दैनंदिन दर्शनार्थ दादा गुरुदेव का वंदन स्थान बना रखा है। जिनालय के रंगमंडप में विभिन्न गुरु भगवंतों के चित्र हैं। उसी में एक आले के मध्य में दादा गुरुदेव का चित्र स्थापित है।

दादावाड़ी का प्रबंध श्री जिनदत्तसूरि चैरिटेबल ट्रस्ट के अन्तर्गत होता है।

पता :

श्री जिनदत्तसूरि जैन दादावाड़ी

95-96-97, त्यागराज रोड़, अग्रहार, मैसूर-570 004 (कर्णाटक), दूरभाष - 0821-2563213

पूज्यश्री के प्रवचनों का लाइव प्रसारण

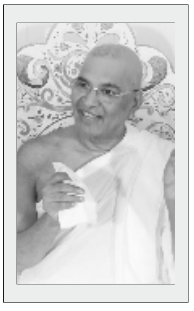

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के जयपुर चातुर्मास के दौरान प्रतिदिन के प्रवचनों का प्रसारण अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् बैंगलोर शाखा के माध्यम से जीवन टीवी चेनल द्वारा लगातार 52 दिनों तक किया गया।

इसके प्रसारण का श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ, जयपुर के साथ-साथ कई लाभार्थियों ने लाभ लिया। इसका संयोजन केयुप डिजिटल ग्रुप के बैंगलोर केयुप के श्री कल्पेश लूंकड एवं श्री विक्रम गुलेच्छा द्वारा किया गया।

प्रतिदिन हजारों श्रद्धालुओं ने इस प्रसारण द्वारा पूज्य गुरुदेवश्री के प्रवचनों का घर बैठे रस पान किया। इसी प्रकार पर्युषण महापर्व के प्रवचनों का लाइव प्रसारण पारस चेनल पर भी किया गया। जिसे भारत सहित संपूर्ण विश्व में देखा गया।

नंदुरबार नगर में मंगलकारी उपधान

महाराष्ट्र के नंदुरबार नगर में पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य रत्न पूज्य उपाध्याय प्रवर श्री मनितप्रभसागरजी म. आदि ठाणा 6 का भव्य चातुर्मास चल रहा है। पूज्यश्री के आध्यात्मिक, तात्त्विक प्रवचनों का लाभ जनता ले रही है।

उनकी प्रेरणा प्राप्त कर श्री संघ ने महामंगलकारी उपधान तप के आयोजन का निर्णय किया है। यह उपधान आसोज वदि 2 ता. 12 सितम्बर 2022 से प्रारंभ होगा। जिसका माल महोत्सव 2 नवंबर 2022 को संपन्न होगा।

गिरनार भावयात्रा के साथ खरतरगच्छ दिवस मनाया

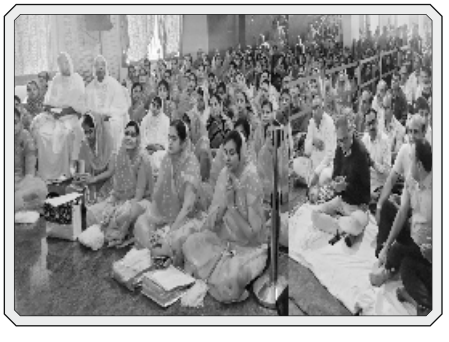

बेंगलोर 2 अगस्त। श्री जिनकुशलसूरि जैन दादावाड़ी ट्रस्ट बसवनगुड़ी के तत्वावधान में गिरनार महातीर्थ की भावयात्रा गुन्टूर के अमित सालेचा ने भावपूर्ण वातावरण में करवाई। इस अवसर पर पू. साध्वी मंजुलाश्रीजी म. ने कहा कि इस चौबीसी में जैनधर्म के 22वें तीर्थंकर परमात्मा नेमिनाथ जी की दीक्षा, केवलज्ञान और मोक्ष कल्याणक गिरनार की पवित्र भूमि पर ही हुआ है इसलिए यह साधक भूमि है। यहां का कण-कण पवित्रता से भरा हुआ है। आगामी चौबीसी के सभी 24 तीर्थंकर इसी पवित्र भूमि से मोक्ष जाएंगे।

गुंटूर से आए अमित सालेचा ने भक्ति गीतों के साथ और वीडियो प्रदर्शन के साथ गिरनार तीर्थ की महिमा बताई। इस अवसर पर ट्रस्ट मंडल के पदाधिकारियों के साथ अनेक सदस्य एवं दादाबाड़ी से जुड़े समस्त संस्थाओं के अनेक सदस्य उपस्थित रहे। कार्यक्रम की शुरुआत में खरतरगच्छ दिवस के उपलक्ष्य में गच्छ के गीत का सामूहिक गायन हुआ एवं सभी ने खड़े होकर गच्छ के गीत को सम्मान प्रदर्शित करते हुए सुना। परम पूज्य गणिवर्य छगनसागरजी महाराज की पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में खरतरगच्छ दिवस के रूप में मनाया जाता है।

श्रावण सुदि 6 को तपस्वी मुनिराज श्री छगनसागरजी की पुण्यतिथि को खरतरगच्छ दिवस के रूप में मनाया जाता है। दि. 3 अगस्त को अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा एवं महिला परिषद् द्वारा मनाया गया। इस अवसर पर सदस्यों द्वारा जिनशासन गीत, दादा गुरुदेव इकतीसा, भक्ति और आरती का आयोजन किया गया।

सामूहिक क्षमापना समारोह

जयपुर 4 सितंबर। पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. आदि मुनि मंडल एवं पूजनीया साध्वी श्री मणिप्रभाश्रीजी म. पू. प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. आदि साध्वी मंडल के पावन सानिध्य में सामूहिक क्षमापना समारोह का आयोजन ता. 4 सितम्बर 2022 रविवार को मोहनवाडी अरिहंत वाटिका में श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ जयपुर के तत्वावधान में किया गया।

जिसमें श्वेताम्बर समाज के सभी संघों के प्रमुखों ने भाग लिया। इस अवसर पर पूज्य गुरुदेवश्री, पू. साध्वी श्री मणिप्रभाश्रीजी, प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री सौम्यगुणाश्रीजी म. आदि ने प्रवचन के माध्यम से क्षमापना का महत्व समझाया। श्री संघ की ओर से स्वामिवात्सल्य का आयोजन किया गया। समारोह का संचालन श्री राजकुमारजी बेंगानी ने किया।

जयपुर मानसरोवर में प्रतिष्ठा

जयपुर के मानसरोवर क्षेत्र में निर्मित हो रहे श्री सुमतिनाथ जिन मंदिर की अंजनशलाका प्रतिष्ठा पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में संपन्न होगी।

इस जिन मंदिर का निर्माण पूजनीया प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म.सा. की पावन प्रेरणा से श्री सुमति कुशल सज्जन सेवा ट्रस्ट, पालीताना द्वारा करवाया जा रहा है। ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री फतेसिंहजी बरडिया के कुशल मार्गदर्शन में इस मंदिर का निर्माण हो रहा है।

पूर्व में दादावाडी का निर्माण भी प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. की प्रेरणा से हुआ था। यह प्रतिष्ठा मिगसर सुदि 5 ता. 28 नवम्बर 2022 को संपन्न होगी। इस हेतु आठ दिवसीय अष्टाह्निका महोत्सव का आयोजन किया गया है।

कुशल वाटिका में शंखनाद की धुन के साथ पूजन

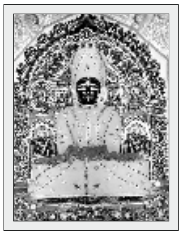

बाडमेर 27 अगस्त। बाडमेर-अहमदाबाद रोड पर स्थित कुशल वाटिका में पर्युषण पर्व के चौथे दिन हजारों श्रद्धालुओं ने दर्शन कर पूजा अर्चना की। प्रात: 8 बजे गिरनार भक्त मण्डल द्वारा शंखनाद व ढोल की थाप लय व सुर के साथ गीत के माध्यम से भगवान का पक्षाल किया गया और विधि व श्लोक के साथ केशर पूजा की गई। पर्युषण पर्व के दौरान भगवान के पक्षाल का लाभ कैलाशचन्द जगदीशचन्द ताराचन्द धारीवाल परिवार, केशर पूजा का लाभ पुरूषोतमदास बांकीदास वडेरा परिवार व भगवान की आरती व मंगल दीपक का लाभ चम्पालाल हीरालाल छाजेड़ परिवार द्वारा लिया गया। कुशल वाटिका ट्रस्ट मण्डल की ओर से भाता प्रभावना व प्रसादी की व्यवस्था की गई।

इस दौरान रंग बिरंगी रोशनी व आंगी सजाई गई। पर्युषण पर्व के दौरान कुशल वाटिका ट्रस्ट मण्डल, अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद, केएमपी व कुशल वाटिका मित्र मण्डल, गिरनार भक्त मण्डल व कई भक्तगण उपस्थित थे।

प्रेषक-कपिल मालू

15 उपवास की तपस्या

चण्डावल सोजत निवासी श्री भैरूलालजी श्रीश्रीमाल की धर्मपत्नी सौ. कांतादेवी श्रीश्रीमाल ने 15 उपवास की तपस्या की। तपस्या का प्रत्याख्यान करने के लिये वे सपरिवार पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.की सन्निधि में जयपुर पहुँचे। पूज्यश्री ने उन्हें पच्चक्खाण करवाया। श्री संघ की ओर से उनका अभिनंदन बहुमान किया गया। श्री भैरूलालजी की ओर से संघ पूजा का लाभ लिया गया।

केयुप क्लिनिक योजना का शुभारंभ

मुंबई 16 अगस्त। श्री जैन श्वेतांबर खरतरगच्छ संघ मुंबई के तत्वावधान में अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् (केयुप) मुंबई शाखा द्वारा 15/08/2022 को 20वां दादा गुरुदेव महापूजन का आयोजन हुआ। खरतरगच्छाधिपति प.पू. आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के 50वें संयम वर्ष निमित केयुप द्वारा संचालित पूरे भारतवर्ष की शाखाओं में केयुप क्लिनिक खोलने की योजना है। जिसका शुभारंभ पू. आ. भ. श्री कीर्तिप्रभसूरिश्वरजी म.सा. आदि ठाणा, प. पू. गच्छगणिनी श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म., पू. साध्वी पूर्णप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा की पावन निश्रा में केयुप मुंबई शाखा में हुआ और जिसका लोकार्पण महाराष्ट्र के कैबिनेट मंत्री मंगलप्रभातजी लोढ़ा एवं केयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष सुरेशजी लुणिया द्वारा किया गया।

केयुप क्लिनिक के माध्यम से विशेषज्ञ डॉक्टर्स द्वारा रियायती दर पर इलाज और दवाओं का वितरण किया जाएगा। इसी क्रम में देश भर में और भी केयुप क्लिनिक का शुभारंभ किया जाएगा। कार्यक्रम के शुरुआत में केयुप मुंबई शाखा के अध्यक्ष श्री चंपालालजी श्रीश्रीमाल ने सभी मेहमानों का स्वागत किया, मंच संचालन सचिव भावेश गांधी ने किया।

श्री जैन श्वेतांबर खरतरगच्छ संघ मुंबई, केयुप मुंबई शाखा, केंद्रीय शाखा, केयुप और केएमपी द्वारा गुरुभक्त जिनशासन और गच्छ के गौरव महाराष्ट्र सरकार में केबिनेट मंत्री श्री मंगलप्रभातजी लोढ़ा और केयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुरेशजी लुनिया का अभिनंदन किया गया। महापूजन के बाद स्वामिवत्सल्य का लाभ श्रीमान रिखबचंदजी सागरमलजी श्रीश्रीमाल परिवार द्वारा लिया गया। समारोह में गुरुभक्त डॉ. एम.एम. बेगानीजी, केयुप केंद्रीय समिति से वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री प्रदीपजी श्रीश्रीश्रीमाल, संगठन मंत्री श्री चंपालालजी वाघेला और बड़ी संख्या में मुंबई के कई गणमान्य आगेवानों की शिरकत रही।

श्री मंगलप्रभातजी लोढ़ा ने बताया कि मेरी हर सुबह दादा गुरुदेव के स्मरण से ही होती है और उनके उपकारों का स्मरण सदैव रहता है। पूज्य गच्छाधिपति श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी महाराज का शुभकामना पत्र भी उन्हें प्रदान किया गया और उन्होंने महाराष्ट्र में पर्युषण दरम्यान कतलखाने बंद करवाने का काम करने का पूरा आश्वासन दिया। श्री सुरेशजी लूनिया ने केयूप के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि ज्ञान वाटिका, स्वाध्याय शिविर, वांचना शिविर, विहार सेवा में पूरे भारत की शाखाएं सेवा प्रदान कर रही है।

पू. आचार्य श्री कीर्तिप्रभसूरीश्वरजी म. ने खरतरगच्छ की गौरवशाली परंपरा और संस्मरण बताए। पू. गणिनि सूर्यप्रभाश्रीजी म. ने पूजन की विविधता और चमत्कारों के बारे में विस्तार से प्रकाश डाला। सैंकड़ों गुरुभक्तों को गुरुभक्ति से विधिकारक श्री विमलजी गुलेच्छा, रायपुर और संगीतकार श्री संजयभाई रांका ने जोड़ा।

केएमपी बुंदी का गठन

बुंदी 20 अगस्त। पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. की प्रेरणा व मंगल आशीर्वाद व सज्जनमणि प्रवर्तिनी पू. श्री शशिप्रभाश्रीजी म. की सुशिष्या पू. साध्वी सम्यग्दर्शनाश्रीजी म. के मार्गदर्शन में बुंदी महिला परिषद् शाखा का विधिवत गठन हुआ। महिला परिषद की अध्यक्षा- श्रीमती राजजी भंडारी, उपाध्यक्षा- श्रीमती विनीताजी को मनोनीत किया गया। सभी को हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं।

आजादी का अमृत महोत्सव में प्रवचन

जयपुर 15 अगस्त। जयपुर रामगंज शांति समिति के तत्वावधान में स्वतंत्रता दिवस पर रामगंज चौपड़ पर प्रातः 11 बजे ध्वजारोहण हुआ। इस अवसर पर जैन समाज के प्रमुख संत खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. की गरिमामय उपस्थिति रही।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि जयपुर पुलिस कमिश्नर श्री आनंद श्रीवास्तव ने अध्यक्षता की। जयपुर जिलाधीश श्री प्रकाश राजपुरोहित विशिष्ट अतिथि एवं अतिरिक्त पुलिस कमिश्नर प्रथम श्री अजयपाल लांबा, अतिरिक्त पुलिस कमिश्नर द्वितीय कैलाश चंद विश्नोई, जयपुर जिला उत्तर डीसीपी श्री परिस देशमुख भी अतिथि रहे।

इस अवसर पर विभिन्न धर्मगुरुओं का भी पदार्पण हुआ। जयपुर उत्तर के रामगंज थानाधिकारी तथा अन्य थाना पुलिस अधिकारी की उपस्थिति के अनिल ठाकुरिया संयोजक एवं मिर्जा सनव्वर बैग सह संयोजक ने इस समारोह को सफल बनाया।

46वीं ओली का पारणा संपन्न

पूजनीया आगम ज्योति प्रवर्तिनी श्री प्रमोदश्रीजी म.सा. की शिष्या कुशल वाटिका प्रेरिका पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. के वर्धमान तप की 46वीं ओली का पारणा पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म. के सानिध्य में दि. 27 अगस्त 2022 को कुशल वाटिका बाडमेर में सानन्द संपन्न हुआ। इस अवसर पर उपस्थित संघ ने पूज्याश्री के तप भावों की अनुमोदना की।

अष्टमंगल

जब तीर्थंकर परमात्मा विचरण करते है तब ये अष्ट मंगल आगे चलते है। उनका परिचय इस प्रकार है-

- स्वस्तिक : पृथ्वीलोक, गगनलोक, पाताललोक, देवलोक में जिनेश्वर के जन्म समय में क्षणमात्र में स्वस्तिक - कल्याण हुआ, उस हेतु से परमात्मा के आगे विद्वानों द्वारा स्वस्तिक किया जाता है।
- श्रीवत्स : प्रभु के हृदय में परमज्ञान रहा हुआ है, वो ज्ञान श्रीवत्स के चिन्ह द्वारा बाहर प्रगट होता है, उसको वंदन करने हेतु श्रीवत्स का आलेखन होता है।
- पूर्णकलशः तीन लोक में एवं अपने कुल में पूर्णकलश की तरह परमात्मा मंगलकारी बने हैं, उस हेतु से पूर्णकलश का आलेखन करके जिनपूजा कर्म को हम सफल बनाते हैं।
- भद्रासन : प्रभावशाली पुष्ट जिनेश्वर के चरणों से पूजित बहुत ही नजदीक में रहा हुआ भद्रासन कल्याण एवं मंगलवाला है, उस हेतु से भद्रासन का आलेखन होता है।
- नंद्यावर्त : हे जिननाथ! तेरे सेवक के सभी दिशा में सभी निधान प्रगट हो रहे हैं, उस हेतु से चार प्रकार का नौ कोण वाला नंद्यावर्त सज्जनों को सुख देने वाला होने से आलेखन करते हैं।
- वर्धमान संपुट : हे जिननायक! तेरी कृपा से पुण्य, यश आदि की वृद्धि होती है, उस हेतु से वर्धमान युगल संपुट को हम धारण करते हैं।
- मीनयुगल : तेरे वध्य (जीतने योग्य) ऐसे कामदेव के चिन्ह रूप किया हुआ अपने अपराध को व्यर्थ नष्ट करने के लिए मीनयुगल सेवा में रहता है, निरोगी अंगों को प्राप्त करने हेतु मीन युगल का आलेखन होता है।
- दर्पण : आत्मा का अवलोकन करने के लिये सभी जिनेश्वर दुष्कर तप ज्ञान, ब्रह्मचर्य, परोपकार करते हुए जिसमें प्रगट हो रहे हैं, ऐसे दर्पण का आलेखन परमार्थ को जाननेवाले, संचेतना वाले श्रावकों द्वारा निर्मित होता है।

जटाशंकर

आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

चिंताओं से ग्रस्त जटाशंकर अपनी दुकान की ओर जा रहा था। रास्ते में मंदिर देखा। लोगों की भारी भीड़ थी। उसने देखा कि लोग श्रद्धा से भर कर देवी माता को नमस्कार कर रहे हैं।

वहाँ खडे पूजारी से पूछा- यहाँ क्या हो रहा है?

पूजारी ने कहा- यह देवी का मंदिर है। बहुत चमत्कारी देवी है। हजारों लोग यहाँ मानता मानने के लिये आते हैं। लोगों की मनोकामना पूर्ण होती है, ऐसा हाजरा हजूर देवी का यह मंदिर है।

जटाशंकर ने पूछा- क्या मैं भी कुछ मानता मान सकता हूँ!

पूजारी ने कहा- क्यों नहीं! देवी मां आपकी मनोकामना पूर्ण करेगी।

जटाशंकर प्रभावित हुआ। वह भीतर गया। दोनों हाथ जोड़कर प्रार्थना करते हुए कहा- हे देवी मां! आज यदि मैंने हजार रूपये कमा लिये तो आधे रूपये आपके भंडार में डालूंगा।

योगानुयोग उस दिन उसने पांच सौ रूपये कमाये। दुकान से जब वह घर जा रहा था। तो रास्ते में देवी मां का वही मंदिर मिला, जहाँ उसने मानता मानी थी।

मंदिर देखते ही मन में विचार आया कि आज मैंने इस मंदिर की मानता मानी थी। जिसका सारांश यह था कि जितना कमाऊँगा, आधा भंडार में डालूंगा।

लेकिन जटाशंकर को एक भी पैसा भंडार में डालना नहीं था। उसने शब्द-जाल का सहारा लेते हुए कहा- हे देवी मां! आप तो बडे होशियार और चतुर हो। मुझ पर जरा-सा भी भरोसा नहीं है। इस कारण आपने अपनी पांती के 500 रूपये पहले ही काट लिये और मुझे 500 ही दिये।

यह चतुराई है। सांसारिक व्यक्ति लोगों को तो ठगता ही है, भगवान और देवी देवताओं को भी ठगने लगा है। वह भले अपनी चतुराई पर अपने मन में अहंकार का अनुभव करे, आखिर तो उसे उसका परिणाम मिलना ही है।

सूरिमंत्र की तृतीय पीठिका की साधना

पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. सूरिमंत्र पीठिका साधना के दूसरे चक्र में तीसरी पीठिका की साधना आसोज वदि 12 बुधवार ता. 22 सितम्बर 2022 से प्रारंभ करेंगे। 25 दिवसीय इस साधना की पूर्णाहुति कार्तिक वदि दूसरी छठ रविवार ता. 16 अक्टूबर 2022 को संपन्न होगी। उसी दिन महापूजन के साथ महामांगलिक का आयोजन होगा।

श्री जिनहरिविहार धर्मशाला में पर्युषण महार्व का ठाठ

RNI : RAJHIN/2004/12270
Postal Registration no. RJ/SRO/9625/2021-2023 Date of Posting 7th

परमात्मा महावीर की देशना भूमि एवं प्रथम गणधर
श्री गौतमस्वामी की केवलज्ञान भूमि कल्याणक तीर्थ

श्री गुणायाजी तीर्थ का शास्त्रशुद्ध जीर्णोद्धार

जिस पावन भूमि परमात्मा महावीर के अनेक समवसरण लगे... जहाँ के कण-कण में परमात्मा महावीर की वाणी विद्यमान है... जहाँ प्रभु महावीर के प्रथम गणधर गौतमस्वामी को केवलज्ञान हुआ... जहाँ पावापुरी की प्रतिकृति स्वरूप विशाल सरोवर में मंदिर स्थित है, ऐसी तपोमयी, साधना से परिपूर्ण परम पावन भूमि श्री गुणायाजी तीर्थ का शास्त्रशुद्ध जीर्णोद्धार प्रारंभ हो रहा है।

यह जीर्णोद्धार विविध समुदायवर्ती प.पू. गच्छाधिपति गुरुभगवंत, आचार्य भगवंत एवं विशाल श्रमण-श्रमणीवृंद के आशीर्वाद से तथा अवंति तीर्थोद्धारक 203 जिन मंदिरों के प्रतिष्ठाकारक पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की परम पावन निश्रा व मार्गदर्शन में हो रहा है। प्रख्यात सोमपुरा श्री मुकेशकुमारजी कन्हैयालालजी सोमपुरा ने इसका मानचित्र तैयार किया है। यहाँ परमात्मा महावीर ने समवसरण में चौमुख विराजमान होकर देशना दी। अतः उस समवसरण की प्रतिकृति रूप चौमुख जिनालय बनाने का निश्चय किया है।

इसी प्रकार गणधर गौतमस्वामी ने केवलज्ञान प्राप्त कर अपनी प्रथम देशना यहाँ दी। अतः उस पावन वेला के स्मरण स्वरूप गौतमस्वामी का मंदिर चौमुख बनेगा। पूज्य आचार्यश्री द्वारा प्रदत्त शुभ मुहूर्त ता. 2 दिसम्बर 2021 को श्री गुणायाजी तीर्थ में परमात्मा महावीर, गौतमस्वामी आदि की प्रतिमाओं व चरणपादुकाओं का विधि विधान के साथ सकल श्री संघ की उपस्थिति में उत्थापन विधान करके नवनिर्मित हॉल में उनकी चल प्रतिष्ठा संपन्न की गई। इसी प्रकार 11 जनवरी 2022 को भूमिपूजन एवम् खनन मुहूर्त संपन्न हो गया है तथा शिलान्यास 25 मई 2022 को हो गया है। जीर्णोद्धार का कार्य प्रारंभ हो गया है। इस महातीर्थ के शास्त्रशुद्ध जीर्णोद्धार में सकल श्री संघ से निवेदन है कि लाभ प्राप्त कर पुण्यानुबंधी पुण्य का उपार्जन करें।

लाभ लेने की सर्व साधारण योजना

तीर्थ स्तंभ
5,04,000.00
उचित स्थान पर परिवार के पाँच नाम, गोत्र व गांव का नाम शिलालेख पर अंकित किये जायेंगे।

आधार स्तंभ
2,07,000.00
उचित स्थान पर परिवार के तीन नाम, गोत्र व गांव का नाम शिलालेख पर अंकित किये जायेंगे।

स्वर्ण स्तंभ
1,08,000.00
उचित स्थान पर परिवार के दो नाम, गोत्र व गांव का नाम शिलालेख पर अंकित किये जायेंगे।

* निवेदक *
श्री जैन श्वेताम्बर भंडार तीर्थ पावापुरी
श्री गौतमस्वामी गुणायाजी तीर्थ जीर्णोद्धार समिति

BHIM UPI

Surendra Kumar Parsan +91 98311 63019 *President*	Tejraj Gulechha +91 96324 12345 *Co-ordinator*	Ramesh Kumar Mutha +91 98400 62232 *Project Co-ordinator*	Mahaveer Metha +91 96867 64061 *Project Co-ordinator*	
J. C. Suchanti +91 94706 08530	Shanti Lal Bothra +91 98310 62470	Pradip Kumar Boyed +91 98838 56565	Subhash Chand Bothra +91 94311 03458	Trilok Chand Parakh +91 94242 26830

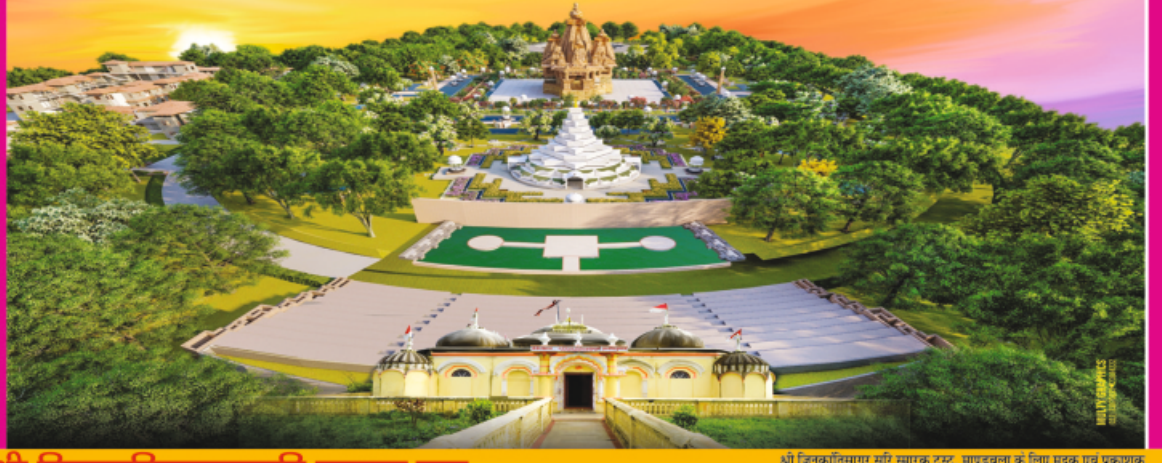

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट,
जहाज मन्दिर, माण्डवला - 343042, जिला - जालोर (राजस्थान)
फैक्स : 02973-256040, फोन : 096496 40451
e-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com

श्री जिनकांतिसागर सूरि स्मारक ट्रस्ट, माण्डवला के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक श्रीमती पुष्पा ए. जैन द्वारा श्री एस. कम्प्यूटर सेन्टर, हनुमानजी मंदिर के सामने वाली गली, जालोरी गेट जोधपुर से मुद्रित एवं जहाज मन्दिर, माण्डवला, जि. जालोर (राज.) से प्रकाशित।
सम्पादक - श्रीमती पुष्पा ए. जैन
www.jahajmandir.org
शब्दांकन : धर्मेन्द्र बोहरा, जोधपुर-98290 22408